भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्रों के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 10 | **जून-जुलाई (संयुक्तांक)** 2009 | **अंक** 6-7

पुस्तक-विलाप

—राजेन्द्र उपाध्याय, दिल्ली

हर शहर में भुतहा लाइब्रेरी होती है
जहाँ बरसों बरस किताबें बिसूरती रहती हैं।

बरसों बरस उन्हें कोई नहीं पूछता
बरसों बरस उन्हें कोई नहीं पोंछता
बरसों बरस उन्हें कोई नहीं छूता।

उनमें छिपकलियाँ अण्डे देने लगती हैं
उनमें दीमकें अपने बेशकीमती घर बना लेती हैं।

पहले थकेहारे बाबू मेहनतकश रिक्शेवाले
वहाँ कभी कभार जाते थे
और कुछ पुस्तकों के पन्ने पलटते थे।

अब पुस्तकें अकेले में रुदन करती हैं
उन्हें कोई माथे से नहीं लगाता।

किताबें 'ममी' में बदल गई हैं
और सार्वजनिक पुस्तकालय शवगृह में
जहाँ हमेशा-हमेशा के लिए दफना दी जाती हैं
किताबें।

एक बहुत बड़े शोकेस में बंद है किताबें
और उसकी चाभी कहीं खो गई है।
इन्हें लिखने वाले कभी के मर गए हैं
इन्हें छापने वाले शेयर बाजार के दलाल हो गए हैं
और इन्हें पढ़ने वाले भी अब मर गए हैं।

मीलों चला जाता हूँ शहर में
कहीं कोई किताबों की दुकान नहीं दिखती
महंगी साड़ियों के शोरूम दिखते हैं।

जो किताबें पढ़ते हैं वे खब्ती और नाकारा लोग हैं
और जो किताबें लिखते हैं वे तो पता नहीं कहाँ से चले
आए हैं।
कई परिवार ऐसे होते हैं जिनमें कोई किताब नहीं पढ़ता
जवानों को फुर्सत नहीं है और बुजुर्ग शायद
जिन्दगी की किताब इतनी मर्त्तबा पढ़ चुके होते हैं
कि उपन्यास उन्हें कोरी गप्प लगते हैं
और कविता पढ़ने से तो भले घर की लड़कियाँ
बिगड़ जाती हैं।

शेष अगले अंक में

वरदे, वीणावादिनि वरदे !

स्कूल-कॉलेज खुल चुके हैं। विश्वविद्यालयों की प्रवेश-प्रक्रिया भी लगभग पूरी हो चुकी है। नया सत्र आरम्भ हो चुका है। बच्चों, किशोरों, युवजनों के नव-उत्साह से भरे-पूरे माहौल में एक कक्षा से दूसरी कक्षा में संक्रमण करने की नयी ऊर्जा है। नये क्षितिज को जानने-समझने की अंत:प्रेरणा से अनुप्राणित नयी-पीढ़ी का यह जुलूस बढ़ रहा है अपने लक्ष्य की ओर।

इसी बिन्दु पर आरम्भ होता है गुरुजनों का दायित्व जिसे वे निभाते चले आ रहे हैं। राष्ट्रीय शिक्षा-नीति के अनुरूप ही प्रत्येक राज्य और केन्द्र-स्तर पर शैक्षणिक बोर्ड हैं जो निर्धारित मानकों के अनुरूप छात्रों के ज्ञानार्जन की जरूरतें पूरी करते आ रहे हैं। लेकिन पिछले दो दशकों से प्रचलित पद्धति की खामियाँ भी नज़र आने लगी हैं। लगातार यह महसूस किया जा रहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय-स्तर पर हमारी शिक्षा पद्धति पिछड़ी हुई है। वस्तुत: आज के प्रतिस्पर्धात्मक-युग में विकसित दुनिया का मुकाबला करने के लिए हमारे शैक्षणिक-तंत्र में व्यापक सुधार की जरूरत है। इसी सुधार की दृष्टि से केन्द्रीय-सरकार के मानव-संसाधन मंत्रालय ने बार-बार शिक्षाविदों की समितियाँ गठित कीं और उनके निष्कर्षों के अनुसार अपेक्षित सुधार भी किये। सुधारों का यह सिलसिला अभी तक जारी है, फिर भी अन्तर्राष्ट्रीय-प्रतिस्पर्धा में हम पिछड़े हुए हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार हमारे वैज्ञानिक और टेक्निकल-संस्थान तो हमारी ही तरह विकासशील देश चीन के मुकाबले भी काफी निचले पायदान पर हैं।

इन्हीं परिस्थितियों का आकलन करते हुए पिछली सरकार ने अलग-अलग समितियाँ गठित कीं जिन्हें शिक्षा में सुधार और परिवर्तन सम्बन्धी सुझाव देने थे। इन समितियों ने अपने सुझाव और निष्कर्ष प्रस्तुत कर दिये हैं। सैम पैत्रोदा की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय-ज्ञान-आयोग (एन-के-सी) ने अपने निष्कर्ष में महँगी शिक्षा-प्रणाली विकसित करते हुए क्रमश: वैश्वक-शिक्षा-व्यवस्था में शामिल होने की वकालत की है। दूसरी ओर प्रो० यशपाल की अध्यक्षता में गठित राष्ट्रीय-शिक्षा-आयोग ने उच्च शिक्षा में आमूल परिवर्तन एवं सुधार के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू०जी०सी०) और अखिल-भारतीय-तकनीकी-शिक्षा परिषद (ए-आई-सी-टी-ई) जैसे विधायक संस्थानों की गतिविधियों पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए उन्हें बन्द करने की सिफारिश की है। क्योंकि इन्हीं संस्थानों की धाँधली और भ्रष्टाचार के चलते निजीकृत-कॉलेजों और डीम्ड विश्वविद्यालयों की भरमार हो गयी। मनमानी फीस-वसूली और लूट-खसोट के चलते उच्च-शिक्षा का स्तर लगातार गिरता गया और हमारी शिक्षा-प्रणाली प्रभावित हुई। अत: राष्ट्रीय-शिक्षा-आयोग ने इन नियामक-संस्थानों को समाप्त करके उनकी जगह राष्ट्रीय-उच्च-शिक्षा एवं शोध-आयोग बनाने की हिमायत की है।

शेष पृष्ठ 2 पर

पृष्ठ 1 का शेष

उपर्युक्त दोनों आयोगों के निष्कर्षों और सुझावों पर काफी विचार-विमर्श के बाद केन्द्रीय-मानव-संसाधन मंत्रालय ने राष्ट्रीय-शिक्षा-आयोग की सिफारिशें स्वीकार कर ली हैं और उन्हें अमल में लाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। इस नयी व्यवस्था में शैक्षणिक संस्थानों की स्वायत्तता और स्वतंत्रता बनाये रखते हुए खण्डित-ज्ञान के बजाय विषय के समेकित ज्ञान की उपलब्धि द्वारा छात्रों के व्यक्तित्व विकास का लक्ष्य सामने रखा गया है। उम्मीद की जा सकती है कि यह प्रणाली प्रतिस्पर्धा के इस दौर में ज्ञान के ब्रह्माण्ड के बीच शिक्षा के नये क्षितिज का उद्घाटन करने में सफल होगी। पर हमें गम्भीरतापूर्वक सोचना होगा कि आशा की यह किरण कहीं देशी-विदेशी पूँजीपतियों द्वारा फैलाया गया इन्द्रजाल तो नहीं जिसकी चकाचौंध में क्रमशः हमारी स्वातंत्र्य-चेतना का अपहरण कर विदेशी विश्वविद्यालयों की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया जा रहा है। इसके बजाय मौजूदा ढाँचे को व्यापक सुधार के दायरे में लाकर उसे रोजगारपरक और जनोन्मुख बनाने की पहल की जाये तो बेहतर होगा।

एक बात और कि विश्व के दूसरे विकसित देशों की तरह हमारे देश के प्रत्येक राज्य में प्राथमिक से उच्च-शिक्षा तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा बने न कि गुलाम-मानसिकता का प्रतीक 'अंग्रेजी'। तभी हम अपने राष्ट्रीय-विकास के शैक्षणिक और सांस्कृतिक मानक निर्मित कर सकेंगे। भाषा, साहित्य और सम्पर्क के स्तर पर अंग्रेजी-भाषा से हमारा कोई विरोध नहीं। बाजार के सम्पर्क और प्रतिस्पर्धा में मुकाबले के लिए अगर अंग्रेजी जरूरी है तो माध्यमिक-शिक्षा के दरम्यान ही क्रमिक रूप से अंग्रेजी-भाषा का अध्ययन भी अनिवार्य हो, किन्तु अपनी राष्ट्रीय-अस्मिता के मूल्य पर नहीं। तभी हम अपनी राष्ट्रीय सांस्कृतिक परिधि में रहकर दृढ़तापूर्वक अन्तर्राष्ट्रीय चुनौतियों का मुकाबला कर सकते हैं और ज्ञानपरक-प्रतिस्पर्धा में विजयी होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

प्रिय-स्वतंत्र-रव, अमृत-मंत्र-नव/भारत में भर दे!
वरदे, वीणावादिनि वरदे।

सर्वेक्षण

नस्लवाद : यूँ तो प्रवासी भारतीयों पर नस्लवादी हमले कोई नयी बात नहीं। ब्रिटेन और अमेरिका में बसे भारतीयों पर इस तरह के हमले अरसे से जारी है। द्वितीय विश्व-युद्ध में हिटलरी-नस्लवाद ने लाखों यहूदियों को अपने गैस-चैम्बर में यंत्रणा देकर मौत के घाट उतार दिया था। इसी क्रम में यूरोप की गौरांग नयी पीढ़ी में 'रेसिज़्म' की शक्ल में यह नस्लवाद पिछले दशक के दौरान परवान चढ़ा। ब्रिटेन के 'बॉल्ड-हेडेड' समूह के शिकार भारतीयों की शिकायत से वहाँ की पुलिस को कोई मतलब नहीं, उल्टे पीड़ित को नसीहत दी जाती है। इसी तरह अमेरिका में भी आये दिन भारतीयों को ही शिकार बनाया जाता है। अमेरिका में अध्ययनरत तमिलनाडु के इंजीनियरिंग छात्र की हत्या को अभी ज्यादा दिन नहीं गुज़रे हैं। ताज़ातरीन घटनाएँ आस्ट्रेलिया और कनाडा की हैं। भारतीय छात्रों पर नस्लवादी हमले को लम्बे अरसे तक नकारने के बाद आखिर आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री ने इस उभरते नस्लवाद को स्वीकार कर लिया, किन्तु समाधान उनके पास भी नहीं है। समाधान हमें ही ढूँढ़ना होगा। शिक्षा, तकनीक, नौकरी और व्यवसाय के क्षेत्र में हमें ऐसी पद्धति का विकास करना होगा कि हमारे लोग पढ़ने और कमाने के लिए विदेश के बजाय अपने देश के आकर्षण में बँधें और आत्म-विकास के साथ-साथ अपने अध्ययन, ज्ञान, तकनीक एवं प्रतिभा के बल पर देश की विकास-यात्रा के नये अध्याय लिखें।

त्राहिमाम् : धरती का तापमान बढ़ रहा है, खेत फटे पड़े हैं, जलस्तर नीचे और नीचे खिसकता जा रहा है, किसान की आँखें आसमान पर टँगी हैं; आखिर क्यों रूठ गया है मानसून? इस प्रश्न की परत-दर-परत उधेड़ते हुए हम प्रकृति की पीड़ा और उसके प्रतिशोध से रू-ब-रू होते हैं। खनिज प्राप्त करने के लिए भूमि का अनियंत्रित खनन, पर्वतों का विखण्डन, जंगलों की अंधाधुंध कटाई, नदियों, तालाबों और दूसरे जलस्रोतों का अवरोध आदि अनेकों दुष्कृत्यों द्वारा धरती के पर्यावरण का विनाश करते हुए हम विकास कर रहे हैं। हालाँकि हमारे नगरों के आकाश पर धूल, धुएँ और रासायनिक-गैसों की परत जमी हुई है, हमारी प्राणवायु-ऑक्सीजन छीजती जा रही है। हमारे देश की अस्सी-फीसदी जनता अपनी बुनियादी जरूरतों से जूझते हुए बिलबिला उठी है, त्राहि-त्राहि कर रही है। इसके समानांतर धरती, प्रकृति और मनुष्य की पीड़ाओं से निरपेक्ष महाशक्तियाँ अपना स्वार्थ साधते हुए महाप्रलय की भूमिका तैयार कर रही हैं। क्या वजह है कि 'रियो-डि-जेनेरियो' में आयोजित किये जाने वाले 'पृथ्वी-सम्मेलनों' में वैज्ञानिकों द्वारा बार-बार व्यक्त की जा रही चिन्ताओं और निष्कर्षों को वे मुस्कुराकर नकार देते हैं ताकि उनका बाज़ार फलता-फूलता रहे। दुनिया के अरबों लोगों की बलि देकर वे चाँद पर बस्तियाँ बसाते रहें। मगर वह दिन दूर नहीं जब प्रकृति प्रतिशोध लेगी और वे अपनी पहचान भी खो बैठेंगे।

पंचभूत का भैरव-मिश्रण
शंपाओं के शकल-निपात,
उल्का लेकर अमर-शक्तियाँ
खोज रहीं ज्यों खोया प्रात।

—परागकुमार मोदी

हिन्दी के इस गौरव की 'जय हो'

—उमेश चतुर्वेदी

जून की भीषण गरमी में हिन्दी की गौरव गाथा गाना इसे रस्मी तौर पर याद करने वाले हिन्दी समाज को थोड़ा अटपटा लग सकता है। वैसे भी इसे सितम्बर के पहले पखवाड़े में ही याद करने का पाखण्ड निभाया जाता है। लेकिन स्लमडॉग मिलियेनर के मशहूर गीत 'जय हो' ने नए झंडे क्या गाड़े, हिन्दी की अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर नई पहचान मिलने का मौका मिल गया है।

हिन्दी भले ही अन्तर्राष्ट्रीय माथे की बिन्दी बनने की तैयारी में है, लेकिन यह भी कम बड़ी विडम्बना नहीं कि जिन प्रदेशों में उसे खाद-माटी मिलती रही है, वहीं उसकी जड़ें कमजोर पड़ती जा रही हैं। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के विगत दिनों आए दसवीं और बारहवीं के नतीजे हिन्दी भाषी इलाकों में इसे लेकर बदल रही मानसिकता का आईना दिखाते हैं। नतीजों के मुताबिक, करीब आठ लाख बच्चे हिन्दी की ही परीक्षा में फेल हुए हैं। यह उस प्रदेश का हाल है, जिसे हिन्दी पट्टी का प्रमुख इलाका होने का गर्व होना चाहिए। विद्रूप देखिए, जिस भाषा को वैश्विक स्तर पर स्वीकृति मिल रही है, उस भाषा का उसके अपने ही घर में पुरसाहाल नहीं है। इसका एक और सुबूत राष्ट्रपति भवन के गरिमामय अशोक हॉल में भी पिछले दिनों देखने को मिला, जब हिन्दी पट्टी के नेता श्रीप्रकाश जायसवाल ने अंग्रेजी में शपथ लेना उचित समझा। उनके इस रुख में ही हिन्दी पट्टी के छात्रों के हिन्दी में फेल होने का जवाब भी छिपा है।

दरअसल आजादी के बाद हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए 15 साल की मोहलत दी गई और इस तरह अंग्रेजी को थोपे रखने का बहाना बनाया गया। इससे हिन्दी पट्टी की प्रतिभाओं के साथ नाइंसाफी ही ज्यादा हुई है। दूसरी तरफ अंग्रेजी हमारे शासकों और नीति नियंताओं की बेहतरी का जरिया बनी रही। अंग्रेजी के साथ कुछ खास और हिन्दी वालों से अलग दिखने का भाव भी बना रहा। लिहाजा हिन्दी पट्टी, जिसे अंग्रेजी का परम्परावादी मीडिया गोबर पट्टी कहता रहा है, कई मायनों में पिछड़ा ही रहा। बीती सदी के साठ के दशक में राम मनोहर लोहिया द्वारा अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन की शुरुआत के पीछे दरअसल ये चिंतायें ही थीं। जब तक आन्दोलन की गरमाहट और उसकी तासीर महसूस की जाती रही, तब तक हिन्दी को लेकर हिन्दी पट्टी में यह गौरवबोध महसूस होता रहा और हिन्दी में फेल होनेवाले छात्रों की संख्या लाखों में नहीं पहुँची। लेकिन पिछले करीब दो दशक से हिन्दी को लेकर हिन्दी पट्टी में यह गौरवबोध कमजोर पड़ने लगा है। नतीजा सामने है।

हिन्दी को लेकर उलटबांसियाँ भी कम नहीं हैं। यह कम हैरत की बात नहीं कि जिस बाजारवाद के दौर में हिन्दी के प्रति उसके अपने इलाकों में आकर्षण घटा है, उसी बाजार ने हिन्दी को नए सिरे से ताकतवर और नया आधार भी मुहैया कराया है। हिन्दी भाषी इलाकों में पैर जमाने के लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के सीईओ को भी आज हिन्दी का सहारा लेना पड़ रहा है। बीती सदी के नब्बे के दशक के शुरुआती दिनों में भारत आए सिटी बैंक या एचएसबीसी बैंक के बारे में शायद ही किसी ने सोचा होगा कि वे हिन्दी में काम करेंगे। लेकिन आज उनके यहाँ आप हिन्दी में भी बातचीत के जरिये काम करा सकते हैं। हिन्दी फिल्में अरसे से हिन्दी के प्रचार-प्रसार में भूमिका निभाती रही हैं। बाजारवाद के विस्तार के इस दौर में हिन्दी के टेलीविजन चैनलों ने यह काम कर दिखाया है। कभी पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और कर्नाटक के लोगों का जायका हिन्दी के नाम पर खराब हो जाता था। लेकिन यह टेलीविजन क्रान्ति का असर है कि अब इन गैर हिन्दीभाषी इलाकों के बच्चों को हिन्दी चैनल ज्यादा लुभाते हैं। इसके लिए उनका एक ही तर्क होता है, हिन्दी टेलीविजन चैनल में काम करने से उनकी अखिल भारतीय पहचान बनती है, जबकि बांग्ला या मराठी में काम करने से उकी दुनिया सिमट जाती है और उन्हें यह सिमटी हुई दुनिया बिलकुल नापसन्द है। और तो और, जिस तमिलनाडु में कभी हिन्दी-विरोध की आग ने तांडव मचा रखा था, वहाँ के लोग अब अपने बच्चों को हिन्दी पढ़ाने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं और अंग्रेजी के नामी-गिरामी अखबार इस बदलाव पर बड़ी खबर बनाकर पेश कर रहे हैं।

बाजारवाद की यह नब्ज हिन्दी क्षेत्र के नौजवान नेताओं ने भी पहचानी है। 'जय हो' का यह गान ब्रिटिश शब्दकोश में हो या ना हो, लेकिन 28 मई को राष्ट्रपति भवन में ज्योतिरादित्य सिंधिया, जितिन प्रसाद और सचिन पायलट ने हिन्दी में शपथ लेकर हिन्दी के इस जयगान को ही नई गति दी है। और तो और, मेघालय जैसे गैर हिन्दीभाषी इलाके से जीतकर आईं अगाथा संगमा ने पूरे आत्मविश्वास के साथ जिस तरह हिन्दी में शपथ ली, साफ है कि भारत में हिन्दी को लेकर नजरिया बदल रहा है। महंगे और अभिजात्य कॉन्वेंट और पब्लिक स्कूलों के बाद विदेशी धरती तक से शिक्षा हासिल कर चुके नई पीढ़ी के इन नेताओं ने साफ कर दिया है कि कम से कम अपनी पहली वाली पीढ़ी से वे भाषा के सन्दर्भ में प्रगतिशील और ठेठ देसी समझ रखते हैं। ऐसे में उन पर भरोसा न करने का फिलहाल कोई कारण नजर नहीं आता। *—अमर उजाला से साभार*

आप बोलेंगे और टाइप करेगा कम्प्यूटर

वह दिन दूर नहीं जब कम्प्यूटर हिन्दी भाषियों के इशारे पर चलेगा। आप हिन्दी में बोलते जाएँगे और आपका कम्प्यूटर आज्ञाकारी बनकर हिन्दी में ही लिखता जाएगा। अगर हिन्दी में लिखेंगे तो कम्प्यूटर हिन्दी में बोलकर बताएगा कि आपने क्या लिखा है। इतना ही नहीं यह क्रान्तिकारी सॉफ्टवेयर अंग्रेजी से हिन्दी में और हिन्दी से अंग्रेजी में अनुवाद भी कर सकता है। अंग्रेजी समेत 9 देशों की भाषा में यह सॉफ्टवेयर अनुवाद कर सकता है।

भारतीय आईटी विभाग की सोसायटी सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कम्प्यूटिंग (सीडैक) में यह सॉफ्टवेयर तैयार किया जा रहा है। पिछले 10 महीनों से इस सॉफ्टवेयर पर 35 लोगों की टीम काम कर रही है। इस सॉफ्टवेयर ने कम्प्यूटर पर टाइप की गई हिन्दी को बोलना शुरू कर दिया है। सॉफ्टवेयर द्वारा हिन्दी सुनकर शब्द टाइप करनेवाला इंजन तैयार किया जा चुका है। इन दिनों हिन्दी बोलने अलग-अलग ढंग और शब्दों के उच्चारण का डाटा बेस तैयार किया जा रहा है ताकि सॉफ्टवेयर हिन्दी सुनकर सही शब्द लिखे। इसके लिए 5000 से ज्यादा लोगों की आवाज के नमूने लिए गए हैं। सभी बोलचाल के ढंग की टेस्टिंग चल रही है, जिसे सही शब्दों पर टेस्ट कर इंजन में डाला जा सके। सीडैक में यह सॉफ्टवेयर स्पीच एंड नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग रिसर्च के तहत तैयार किया जा रहा है। प्रोजेक्ट से जुड़े वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इस सॉफ्टवेयर को फिलीपिंस, थाईलैंड, कोरिया, चीन, जापान समेत 9 देशों के साथ मिलकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तैयार किया जा रहा है। कारोबार के उद्देश्य से तैयार किया जा रहा यह सॉफ्टवेयर अगले 3 चरणों में हिन्दी भाषा का इन 9 देशों की भाषाओं में अनुवाद कर सकेगा।

क्राउड सोर्सिंग से होगी टेस्टिंग—तैयार करने के बाद यह सॉफ्टवेयर क्राउड सोर्सिंग के जरिए टेस्ट किया जाएगा। लोगों को यह सॉफ्टवेयर मुफ्त उपलब्ध कराया जाएगा ताकि लोगों के फीडबैक के आधार पर सॉफ्टवेयर में रह गई खामियों को सुधारा जा सके। हिन्दी होने के कारण इसमें कमियाँ रहना सम्भव है।

मोबाइल पर भी करेगा काम—इस सॉफ्टवेयर को पूरी तरह तैयार करने के बाद इसे मोबाइल पर काम करने के लिए तैयार किया जाएगा। जिसके बाद यह दूसरे देशों से होनेवाली बातचीत को 9 भाषाओं में से किसी में भी अनुवाद करके बोलेगा। इस तरह मोबाइल पर यह अनुवादक का काम भी करेगा।

किताबों में कॅरियर

यदि आप परम्परागत पाठ्यक्रमों से हटकर कुछ इस तरह का पाठ्यक्रम अपनाना चाहते हैं, जिसमें बेहतर पैसों के साथ ही निरन्तर सूचनाओं से भी जुड़े रहें, तो आपके लिए पुस्तकालय विज्ञान में कॅरियर बनाना अच्छा होगा। आजकल इस क्षेत्र में प्रशिक्षित पेशेवरों की अच्छी माँग है।

पाठ्यक्रम

- बैचलर ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन साइंस (बी.लिब.)
- मास्टर ऑफ लाइब्रेरी एंड इन्फॉर्मेशन साइंस (एम.लिब.)
- सर्टिफिकेट या डिप्लोमा कोर्स

योग्यता

बी.लिब. कोर्स करने के लिए किसी मान्यता प्राप्त संस्थान या विश्वविद्यालय से स्नातक होना जरूरी है, जबकि सर्टिफिकेट या डिप्लोमा कोर्स करने के लिए बारहवीं पास होना आवश्यक है।

कार्य

पुस्तकालय से सम्बन्धित कर्मचारियों का मुख्य कार्य 'सही व्यक्ति को सही समय पर सही सूचना' प्रदान करना होता है। यही कारण है कि अब पुस्तकालय 'ज्ञान केन्द्र' (नॉलेज सेंटर) के रूप में भी जाने जाने लगे हैं। पुस्तकालय विज्ञान के कार्य को तीन भागों में बाँटा जा सकता है—पाठकों को सामान्य सेवाएँ देना (जैसे-पुस्तकों का आदान-प्रदान), तकनीकी कार्य (पुस्तकों की एंट्री, इंडेक्सिंग आदि) तथा प्रशासनिक कार्य (सुविधाएँ बढ़ाने या पुस्तकालय से सम्बन्धित कामकाज को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए वरिष्ठ अधिकारियों से सम्पर्क बनाए रखना, पुस्तकों की खरीदारी आदि)।

कौन-कौन से हैं पद

आकार के अनुसार किसी पुस्तकालय में विभिन्न तरह के लोग होते हैं। सबसे बड़ा पद पुस्तकालयाध्यक्ष या पुस्तकालय प्रबन्धक का होता है। यह पद प्रोफेसर पद के समतुल्य है। इसके बाद उप-पुस्तकालयाध्यक्ष (रीडर पद के समकक्ष), सहायक-पुस्तकालयाध्यक्ष (लेक्चरर पद के समतुल्य), पुस्तकालय सहायक या तकनीकी सहायक आदि के पद होते हैं। ये सभी पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में प्रशिक्षित होते हैं।

पारिश्रमिक

पुस्तकालय सहायक या तकनीकी सहायक का आरम्भिक पारिश्रमिक दस हजार रुपये से ऊपर होता है। विश्वविद्यालयों या समकक्ष शैक्षणिक संस्थानों में सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में नियुक्त होने पर और अच्छा पारिश्रमिक मिलता है।

सम्भावनाएँ

हमारे देश में स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, अन्य शैक्षिक संस्थानों में समृद्ध पुस्तकालय तो होते ही हैं, इसके अलावा जागरूकता बढ़ाने के लिए सरकारी और निजी संस्थानों में भी पुस्तकालय के साथ-साथ सन्दर्भ विभाग (रेफरेन्स डिपार्टमेंट) होता है। मीडिया, खासकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रसार ने भी सन्दर्भ विभाग के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है।

राष्ट्रीय ज्ञान आयोग (नेशनल नॉलेज कमीशन) द्वारा वर्ष 2015 तक करीब 1500 विश्वविद्यालय खोलने की अनुशंसा से आने वाले दिनों में बड़ी संख्या में पुस्तकालय खुलेंगे। खास बात यह है कि कॉर्पोरेट कम्पनियाँ भी अपने यहाँ पुस्तकालय को प्रोत्साहित कर रही हैं और सम्बन्धित कर्मचारीगण को आकर्षक पारिश्रमिक प्रस्तावित कर रही हैं। आज अधिकांश पुस्तकालयों ने खुद को वीडियो लाइब्रेरी, कैसेट-सीडी लाइब्रेरी, कम्प्यूटर लाइब्रेरी, साइबर लाइब्रेरी, इंटरनेट लाइब्रेरी, फोटो लाइब्रेरी, सॉन्ग लाइब्रेरी (रेडियो स्टेशन या एफएम चैनल्स में), स्लाइड लाइब्रेरी आदि के रूप में सुसज्जित कर लिया है। इसके लिए काफी संख्या में प्रशिक्षित पेशेवरों की आवश्यकता है।

प्रमुख संस्थान

● दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ● इंदिरा गाँधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, दिल्ली ● जामिया मिल्लिया इस्लामिया, जामिया नगर, नई दिल्ली ● बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी ● अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़ ● इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद ● लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ ● पटना विश्वविद्यालय, पटना ● अवध प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा ● डॉ० हरि सिंह गौड़ विश्वविद्यालय, सागर ● बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी ● गुरु नानक देव विश्वविद्यालय, अमृतसर ● पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ ● जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू ● कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र आदि। *— दैनिक जागरण से साभार*

हिन्दी समाज के बुद्धिजीवियों से एक अपील

हिन्दी और उसकी बोलियों का अन्तर्सम्बन्ध इन दिनों विवाद का विषय बना हुआ है। भोजपुरी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी आदि को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की माँग तेज हो गयी है। पिछले दिनों हिन्दी के कुछ वरिष्ठ लेखकों ने अपने विवादास्पद बयानों से इसे और अधिक उलझा दिया है।

वस्तुतः जातीय चेतना जहाँ सजग और मजबूत नहीं होती वहाँ वह अपने समाज को विपथित भी करती है। समय-समय पर उसके भीतर विखण्डनवादी शक्तियाँ सर उठाती रहती हैं। विखण्डन व्यापक साम्राज्यवादी षडयन्त्र का ही एक हिस्सा है। दुर्भाग्य से हिन्दी जाति की जातीय चेतना मजबूत नहीं है। पहले से ही टुकड़ों में बँटे हिन्दी भाषी राज्यों के पिछले दिनों कई टुकड़े किए गए जिनका विरोध करना तो दूर, बिहार से अलग होने के तुरन्त बाद झारखण्ड के लोग गीत गाते देखे गए कि 'रबड़ी मलाई खइलू कइलू तन बुलंद, अब खइह सकरकंद अलगा भइल झारखण्ड।'

पिछले दिनों हिन्दी की एक बोली मैथिली को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है। इसी तरह यदि अन्य बोलियों को भी आठवीं अनुसूची में शामिल करके हिन्दी के समानान्तर भाषा का दर्जा दे दिया गया तो आने वाली जनगणना में मैथिली की तरह भोजपुरी, ब्रजी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी आदि को अपनी मातृभाषा बताने वाले लोग हिन्दी भाषी नहीं गिने जायेंगे और तब हिन्दी को मातृभाषा बताने वाले गिनती के रह जायेंगे, उसकी संख्या बल की ताकत खत्म हो जाएगी और तब अंग्रेजी को भारत की राजभाषा बनाने के पक्षधर उठ खड़े होंगे और उनके पास उसके लिए अकाट्य वस्तुगत तर्क होंगे। उल्लेखनीय है कि सिर्फ संख्या के बल पर ही हिन्दी भारत की राजभाषा के पद पर प्रतिष्ठित है।

मित्रों, हिन्दी क्षेत्र की विभिन्न बोलियों के बीच एकता का सूत्र यदि कोई है तो वह हिन्दी ही है। हिन्दी और उसकी बोलियों के बीच परस्पर पूरकता और सौहार्द का रिश्ता है। हिन्दी इस क्षेत्र की **जातीय भाषा** है, जिसमें हम अपने सारे औपचारिक और शासन सम्बन्धी काम-काज करते हैं। यदि हिन्दी की तमाम बोलियाँ अपने अधिकारों का दावा करने लगें तो हिन्दी की राष्ट्रीय छवि टूट जाएगी और राष्ट्रभाषा के रूप में उसकी हैसियत भी संदिग्ध हो जाएगी।

इतना ही नहीं, इसका दुष्परिणाम यह भी होगा कि मैथिली, ब्रजी, राजस्थानी आदि के साहित्य को विश्वविद्यालयों के हिन्दी पाठ्यक्रमों से हटाने के लिए विवेश होना पड़ेगा। विद्यापति को अबतक हम हिन्दी के पाठ्यक्रम में पढ़ाते आ रहे थे। अब हम उन्हें पाठ्यक्रम से हटाने के लिए बाध्य हैं। वे अब सिर्फ मैथिली के कोर्स में पढ़ाये जायेंगे। क्या कोई साहित्यकार चाहेगा कि उसके पाठकों की दुनिया सिमटती जाय?

मित्रों, आज समय की माँग है कि हम हिन्दी समाज में पनप रही इस आत्मघाती प्रवृत्ति से लोगों को सचेत करें और अंग्रेजी के वर्चस्व के खिलाफ एकजुट हों।

—डॉ० अमरनाथ, आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

सहज स्वीकृत संदेश

—लीलाधर जगूड़ी

पन्द्रहवीं लोकसभा के चुनाव में तमाम तरह के अपशब्द कहे गए हैं, लेकिन कुछ शुभ संवाद भी हुआ है। वरिष्ठ नेता प्रणव मुखर्जी ने एक टीवी चैनल पर इंटरव्यू देते हुए कहा कि इस देश के प्रधानमंत्री का निर्धारण हिन्दी भाषा करती है। यह विचित्र किन्तु सत्य बहुत विलम्ब से प्रकट हुआ है और वह भी गाँधी का वारिस बताने वाली कांग्रेस के माध्यम से। अगर इसे कांग्रेस का न मानकर एक जिम्मेदार कांग्रेसी का वक्तव्य भी मान लिया जाए तो भी इसमें भविष्य की राजनीति करने वालों के लिए बड़े संदेश छिपे हुए हैं।

पहला संदेश यह है कि एक सर्वज्ञात देशज राष्ट्र भाषा का अपना महत्त्व है। *दूसरा* यह कि स्थानीयता और जातीयता से परे ले जाती है—हिन्दी। *तीसरा* संदेश यह है कि भारत की आत्मा एक देशज सम्पर्क भाषा को अपने लिए खोज चुकी है। क्षेत्रीय, जातीयता और इलाकाई भाषाओं का दुराग्रह भारतीय राजनीति की शाश्वत बुराई के रूप में स्थापित होते जा रहे हैं। इनसे निपटने के लिए वैश्विक दृष्टिकोण के तहत राष्ट्रीय अस्मिता की पहचान बहुत जरूरी है।

हिन्दी लोकतांत्रिक तरीके से स्वत: फैल रही है। इसे न कोई संस्था फैला रही, न सरकार। इसे जनता खुद आपस में एक राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा के रूप में जुबानी फैला रही है। बोलना ही किसी भाषा को जीवित रखता है और फैलाता है। पूरे राष्ट्र में समझी और बोली जाने वाली कोई भाषा अगर प्रत्येक स्थानीय भूगोल और जीवन में मौजूद हो तो उसे राष्ट्रीय सम्पर्क भाषा होने से कौन रोक सकता है। अगर वह राष्ट्र के प्रधानमंत्री जैसे उच्च पद की योग्यता में शामिल है तो यह सत्य अब सभी राजनीतिक पार्टियों को स्वीकार लेना, उन्हीं के हित में रहेगा।

बंगाल में कम्युनिस्ट पार्टी का लम्बा शासन रहा है, लेकिन उन्होंने हिन्दी अथवा किसी दूसरी भारतीय भाषा को बंगाल में घुसने नहीं दिया। आज महाश्वेता देवी खुद कहती हैं कि मैं पूरे राष्ट्र में जानी जाती हूँ तो हिन्दी के कारण। मुस्लिम कम्युनिस्टों को छोड़कर कोई भी बंगाली कॉमरेड अच्छी हिन्दी नहीं जानता। प्रणव मुखर्जी ने सही कहा है कि इस देश में हिन्दी न जानने वाला प्रधानमंत्री टिक नहीं सकता और जबर्दस्ती टिकेगा तो सफल नहीं हो सकता। उन्होंने कामराज के प्रधानमंत्री न बन पाने को और देवगौड़ा के प्रधानमंत्री बनने के बाद भी हिन्दी न जानने को लक्षित किया। उन्होंने नरसिंह राव की सफलता के पीछे हिन्दी का हाथ बताया। हिन्दी इन साठ वर्षों में घुटनों के बल चलते-चलते लगभग सभी सूत्रों में सम्पर्क भाषा बनी हुई है। लगभग चौदह सूत्रों में यह धड़ल्ले से परिवारों और जन-जीवन के रोजमर्रा की भाषा बनी हुई है। यह हिन्दी का घुटनों चलना सरकार की कृपा से नहीं हुआ है। राष्ट्र-भाषा की कमी के अहसास से और स्थानीय सीमाओं से हिन्दी ने भारत के जनमानस को शक्ति और मुक्ति दोनों दी है। 15 अगस्त 1947 को बीबीसी के संवाददाता को आजाद भारत में पहला इंटरव्यू देते हुए गाँधीजी ने कहा था कि ''आज पूरी दुनिया को बता दो कि गाँधी अंग्रेजी बोलना भूल गया है।'' गाँधी को आजादी की पहली प्रतीति भाषा की मुक्ति में हो रही थी। जब भाषा मुक्त होगी तो आत्मा मुक्त होगी। चेतना पर भाषा की गुलामी भी बहुत बड़ी पराधीनता है। गाँधीजी ने आजाद भारत में व्यक्ति की मुक्त चेतना के लिए भाषा की मुक्ति को सर्वोपरि माना और भारतीय चेतना की अभिन्न भाषा के रूप में हिन्दी को महत्त्व दिया।

आज एक नई हिन्दी का जन्म हो गया है, जो भारत के दक्षिण से उत्तर की ओर तथा भारत के पूर्व से भारत के पश्चिम की ओर आ रही है। चेन्नई और केरलीय हिन्दी के साथ-साथ मणिपुरी और नगा हिन्दी को मिलने से अब कोई रोक नहीं सकता। क्योंकि हिन्दी अखिल भारतीय बाजार की सशक्त भाषा बनकर उभरी है। जबानी हिन्दी का यह फैलाव एक दिन लिपि के स्तर पर भी पूरी तरह फैलेगा। प्रणव मुखर्जी की यह बात सभी राजनीतिक दलों को गाँठ बाँध लेनी चाहिए कि भारत में बिना हिन्दी के अखिल भारतीय नेतृत्व नहीं किया जा सकता है।

—हिन्दुस्तान से साभार

यहूदियों का भाषा प्रेम

इसराइल का धर्म 'यहूदी' है। ये लोग 14 सितम्बर को नववर्ष के रूप में 'रोश हशनाह' के नाम से मनाते हैं। यह यहूदियों का परम्परागत उत्सव है। जब सन् 1948 में पूरे विश्व के यहूदी 'इसराइल' में एकत्र हुए और यह एक देश बन गया तो सबसे पहले इन्होंने अपनी भाषा हिब्रू को अपनाया। उस समय तक हिब्रू को मृतभाषा मान लिया गया था। किन्तु यहूदियों ने इसे अपनी मातृभाषा और राष्ट्र भाषा घोषित करके पूरे विश्व को चकित कर दिया। सारा राजकाज व उच्च शिक्षा 'हिब्रू' में ही करने की व्यवस्था की।

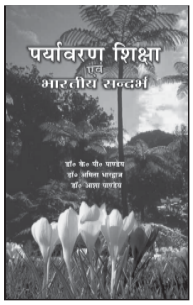

पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ

डॉ० के०पी० पाण्डेय
डॉ० अमिता भारद्वाज
डॉ० आशा पाण्डेय

पृष्ठ : 336

सजि. : रु० 250.00 ISBN : 978-81-7124-442-3
अजि. : रु० 150.00 ISBN : 978-81-7124-443-0
प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

भारतीय परिदृश्य में हमारे पर्यावरण के संकट ने औद्योगीकरण एवं नगरीकरण की चपेट में और उग्र रूप धारण किया है जिससे हर आयु वर्ग के भारतीय का जीवन स्तर एवं जीवन की गुणवत्ता प्रत्यक्ष एवं परोक्ष दोनों ही रूपों में प्रभावित हुई है। गरीबी बढ़ रही है, भौतिक परिवेश अनाकर्षक एवं अस्वास्थ्यकर बनता जा रहा है, बेरोजगारी एवं अशिक्षा जोरों पर है, लोगों में परस्पर विश्वास, सहिष्णुता एवं भाईचारा की भावना घट रही है जिससे पूरे भारतीय समाज की 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की पहचान पर प्रश्नचिह्न लग रहा है। इस दृष्टि से पर्यावरण शिक्षा का महत्त्व बढ़ जाता है। भारतीय समाज की शिक्षा व्यवस्था के हर स्तर पर इस प्रकार की शिक्षा के प्रावधान का प्रसंगौचित्य सहज ही आंका जा सकता है।

प्रस्तुत ग्रन्थ **पर्यावरण शिक्षा एवं भारतीय सन्दर्भ** इसी शृंखला में लेखकगण द्वारा बी०एड० एवं एम०एड० स्तर के शिक्षा-शास्त्र के विद्यार्थियों, शिक्षकों, पर्यावरण के नीति निर्माताओं एवं प्रशासकों की आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखकर भारतीय परिप्रेक्ष्य को उजागर करने का एक प्रयास है। इसके तहत पर्यावरण के अर्थ, पर्यावरण के विविध आयामों—भौतिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक, पर्यावरण प्रदूषण से तात्पर्य, पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार तथा उनकी रोकथाम, पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम में शिक्षा की भूमिका, पर्यावरण शिक्षा-अर्थ, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्त्व, पर्यावरण शिक्षा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, पर्यावरण शिक्षा को प्रभावित करने वाले कारक, पर्यावरण शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं से अपेक्षाएँ, पर्यावरण शिक्षा के विविध संसाधन, पर्यावरण शिक्षा को प्रभावी बनाने के विविध रचना-कौशल तथा पर्यावरण शिक्षा में क्रियात्मक अनुसन्धान एवं अन्य कार्यक्रमों का संचालन एवं मूल्यांकन आदि के सम्बन्ध में कुल बारह अध्यायों में विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है। हर अध्याय के अन्त में 'विचारणीय मुद्दे' भारतीय सन्दर्भ को दृष्टिगत रखकर उल्लिखित हैं। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल एवं बोधगम्य रखी गई है।

इस्लाम और आधुनिक भारत [भारतीय मुस्लिम नेतृत्व के राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचार] **से....**

1. शाह वलीउल्लाह [1702–1762]

शाह वलीउल्लाह अठारहवीं सदी के भारत के सर्वश्रेष्ठ इस्लामी विद्वान तथा सूफी माने जाते हैं। उनके पिता शाह अब्दुल रहीम भी उच्च कोटि के विद्वान तथा सूफी मत को मानते थे। वह दिल्ली के निवासी थे। विचार और कार्य दोनों में शाह वलीउल्लाह का बहुआयामी व्यक्तित्व था। धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि पर उनके विचार सुधारात्मक तथा परिवर्तनकारी थे।

शिक्षा : *शाह वलीउल्लाह ने अपने पिता के दिल्ली स्थित मदरसे में प्रारम्भिक और माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा उन्होंने दो साल अरब में रहकर प्राप्त की। 1718 में उनके पिता का निधन हो गया। शाह वलीउल्लाह ने उस मदरसे को न केवल इस्लामी शिक्षा का, बल्कि राजनीति का भी, एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र बना दिया।*

नई राजनीतिक पार्टी : *यहीं उन्होंने 1731 में अपनी राजनीतिक पार्टी 'जमीयते मरकज़ी' की स्थापना की। उत्तर भारत में दूर पश्चिम तथा पूरब में बंगाल तक इसकी अनेक शाखाएँ मदरसों को केन्द्र बनाकर स्थापित की गईं। बाद में यह पार्टी गुप्त रूप से सशस्त्र विद्रोह की तैयारी करने लगी।*

1857 के विप्लव में उनके अनुयाइयों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया था। देवबंद का प्रसिद्ध मदरसा उनके अनुयाइयों ने 1867-68 में स्थापित किया था।

मुग़ल साम्राज्य की रक्षा में : *शाह वलीउल्लाह ने निरन्तर दुर्बल हो रहे मुग़ल साम्राज्य को पुनरुज्जीवित एवं शक्तिशाली करने का प्रयास किया। मराठों, सिखों और जाटों की बढ़ती हुई शक्ति से मुग़ल साम्राज्य के रक्षार्थ अहमदशाह अब्दाली और रुहेलखंड के शासक नजीबुल्लाह को प्रेरित किया। फलत: 1861 में पानीपत का युद्ध हुआ, जिसमें मराठों की पराजय हुई।*

लेखन : *छोटी-बड़ी लगभग तीस पुस्तकें उन्होंने लिखी हैं। इनमें से कुछ तो आज भी इस्लामी जगत में पढ़ी जाती हैं। उन्होंने परम्परा की अनदेखी कर क़ुरान का अनुवाद किया। यह अनुवाद फ़ारसी में था। उनकी प्रेरणा से उनके बेटों ने क़ुरान का अनुवाद उर्दू में किया। जो काम गोसाइँ तुलसीदास ने रामकथा को हिन्दी में लिखकर किया था, वही काम शाह वलीउल्लाह ने क़ुरान का फ़ारसी तथा उर्दू में अनुवाद कर भारत की इस्लामी दुनिया में किया।*

शाह वलीउल्लाह भारत में अठारहवीं सदी के सर्वश्रेष्ठ मुस्लिम धर्मशास्त्री और सूफी माने जाते हैं। भोपाल के प्रसिद्ध विद्वान मौलवी सैयद सिद्दीक़ हसन के अनुसार शाह वलीउल्लाह हनफ़ी फ़िक़ा के रचनाकार अबु हनीफ़ा की कोटि के विद्वान थे। क़ुरान की व्याख्या, हदीस[1], इस्लामी क़ानून और फ़िक़ा[2] के तार्किक विश्लेषण में वह अपने समय के सर्वश्रेष्ठ विद्वान थे। यद्यपि वह अबु हनीफ़ा की इस्लामी क़ानून की व्याख्या को स्वीकार करते थे, किन्तु कभी-कभी अपना स्वतंत्र मत भी प्रकट कर देते थे।.....

2. सर सैयद अहमद ख़ाँ [1817–1898]

सर सैयद अहमद ख़ाँ दिल्ली के एक ऐसे परिवार में पैदा हुए थे जिसके पूर्वज अकबर के शासन-काल में हेरात (अफ़ग़ानिस्तान) से आकर दिल्ली में बस गए थे। तब से उनके पूर्वज मुग़ल दरबार में मनसबदार होते आए थे। सर सैयद की शिक्षा दिल्ली में हुई और वहीं 1838 में अंग्रेज़ी सरकार की अदालत में क्लर्क नियुक्त हुए और 1876 में जज के पद से सेवानिवृत्त हुए।

नवजागरण के नेता : *वह भारतीय नवजागरण के एक प्रमुख नेता थे। जो काम राजा राममोहन राय ने हिंदू समुदाय के लिए किया वही सर सैयद ने मुस्लिम समुदाय के लिए किया। उन्होंने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि जब तक भारतवासी पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त नहीं करेंगे, तब तक वे न तो स्वतंत्र हो सकते हैं और न ही आर्थिक दृष्टि से उन्नत। उन्नति की दौड़ में पिछड़ गए मुसलमानों को उन्होंने न केवल नई शिक्षा के लिए प्रेरित किया बल्कि नई शिक्षा की अनेक नई संस्थाओं की स्थापना भी की। अलीगढ़ का 'एंग्लो मोहमडन ओरियंटल कॉलेज' (1875) उनमें से एक है जो इस समय (2007 में) एक स्वशासित विश्वविद्यालय है।*

पिता तथा नाना : *उनके पिता सैयद मुतक़्क़ी का बादशाह अकबर शाह से घनिष्ठ संबंध था। उनके नाना ख़्वाजा फ़रीदुद्दीन एक प्रसिद्ध गणितज्ञ, ज्योतिषी, अर्थशास्त्री और चतुर राजनयिक थे। सर सैयद ने गणित आदि की शिक्षा उन्हीं से प्राप्त की थी।*

राजनीतिक विचार : *उन्होंने मुसलमानों को राजनीति से अलग और अंग्रेज़ी सरकार के वफ़ादार रहने की सलाह दी। उस समय के अन्य नेताओं की तरह वह भी अंग्रेज़ी शासन को भारत के लिए हितकर मानते थे। उन्होंने इस्लाम धर्म की युगानुरूप पुनर्व्याख्या करने तथा कालकवलित पुराने रीतिरिवाजों को छोड़ने की भी सलाह दी। वह हिंदू-मुस्लिम एकता तथा संयुक्त राष्ट्रीयता के पक्षधर थे।*

1857 का विप्लव : *उन्होंने विशेषकर 1857 के विप्लवकाल में अंग्रेज़ों की भरपूर मदद की थी। अंग्रेज़ी सरकार ने उनकी सेवाओं से ख़ुश होकर उन्हें 'नाइट' (सर) की उपाधि से विभूषित किया। 1878 में वे केंद्रीय विधान परिषद के सदस्य नियुक्त हुए और 1887 में लोकसेवा आयोग के सदस्य।*

लेखन : *सर सैयद बहुमुखी प्रतिभा के स्वामी थे। उर्दू के वह सशक्त लेखक थे। उन्होंने अनेक विषयों पर प्राय: तीस पुस्तकें लिखीं और अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का संपादन तथा अनुवाद किया। 'असरार-उल-सनादीद' और 'असबाबे बग़ावत' उनके गवेषणात्मक ग्रंथ हैं। पहला ग्रंथ दिल्ली की इमारतों तथा अवशेषों से तथा दूसरा 1857 के विप्लव से संबंधित है। इनका इंग्लिश के अलावा फ्रेंच तथा अन्य यूरोपीय भाषाओं में भी अनुवाद हुआ। 27 मार्च, 1898 को अलीगढ़ में उनका निधन हो गया।*

सैयद अहमद ख़ाँ एक कुलीन मुस्लिम परिवार के उज्ज्वल रत्न थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ही गतिशील और प्रतिभासंपन्न था। वह नेतृत्व की क्षमता से परिपूर्ण थे। 1857 के विप्लव के बाद तो मुसलमानों का धार्मिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक उत्थान ही उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था।

धार्मिक विचार

धर्म बनाम बुद्धि : सर सैयद अहमद कहते हैं—ज्ञान, विश्वास तथा ईमान की प्राप्ति का एकमात्र साधन बुद्धि है। धर्म को बुद्धिगम्य होना ही चाहिए। वही धर्म-मज़हब ठीक है, जो मानवीय प्रकृति के अनुकूल है। इस कसौटी पर परखने पर हम पाते हैं कि इस्लाम धर्म मानव-प्रकृति के अनुकूल तथा अनुरूप है। मुझे विश्वास है, इस्लाम पूर्ण और अंतिम धर्म है। ख़ुदा ने हमें पैदा किया है और हमारे लिए जो आदेश भेजे हैं, वे हमारे स्वभाव तथा प्रकृति के अनुकूल हैं। जो व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करता है और जिसे एकेश्वरवाद (तौहीद) में विश्वास है, वह मुसलमान है। मुहम्मदी होने के लिए यह भी आवश्यक है कि हम उस व्यक्ति पर विश्वास करें जिसने हमें एकेश्वरवाद जैसा अनमोल रत्न दिया है और साथ ही उसकी शिक्षा भी दी है, जिससे हमने ख़ुदा और उसके गुणों को पहचाना है.../

विस्तृत अध्ययन हेतु पढ़ें—

इस्लाम और आधुनिक भारत

प्रो० मुकुटबिहारी लाल

सम्पादक :

सत्यप्रकाश मित्तल

प्रथम संस्करण : 2009 ई०

मूल्य : सजि. रु० 120.00, अजि. रु० 70.00

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन ,चौक, वाराणसी

www.vvpbooks.com

अत्र-तत्र-सर्वत्र

ज्ञान पर सबका अधिकार

गुणवत्तापरक शिक्षा हासिल करने का हक सबको है। इस बात को महसूस करते हुए हारवर्ड बिजनेस स्कूल जैसे दुनिया के शीर्ष शिक्षण संस्थानों एवं विश्वविद्यालयों ने अपनी कैंपस कक्षाओं में शिक्षकों द्वारा दिए जाने वाले लेक्चर्स की वीडियो शेयरिंग वेबसाइट यूट्यूब (youtube.com) पर नि:शुल्क उपलब्ध कराने की सराहनीय पहल की है। यूट्यूब वेबसाइट पर जाकर आप मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी एवं बर्कले कॉलेज ऑफ म्यूजिक जैसे उत्कृष्ट शिक्षण संस्थानों में प्रोफेसरों द्वारा दिए जाने वाले व्याख्यानों को सुन एवं देख सकते हैं। शिक्षण संस्थानों की मदद से गुणवत्तापरक शिक्षा के विस्तार का यह प्रयास छात्रों के लिए काफी मददगार साबित हो रहा है। इन व्याख्यानों के वीडियो देखने के लिए वेबसाइट के होमपेज के वीडियो लिंक पर क्लिक करने के उपरान्त ओपन विंडो में एजुकेशन पर डबल क्लिक कीजिए। इसके साथ ही विभिन्न शिक्षण संस्थानों के ज्ञानवर्द्धक वीडियो डिस्प्ले हो जाएँगे।

यूट्यूब ने इस वर्ष मार्च में एजुकेशन सेक्शन शुरू किया है। दुनिया के विभिन्न देशों की करीब 100 से अधिक शिक्षण संस्थाओं ने यूट्यूब के इस अभियान में सहयोग किया है। यूट्यूब के एजुकेशन सेक्शन में गणित, विज्ञान, संगीत एवं अन्य विभिन्न विषयों से जुड़े ज्ञानवर्द्धक वीडियो उपलब्ध हैं।

शिक्षा के प्रसार सम्बन्धी यूट्यूब के इस अभियान के फलस्वरूप अब वे छात्र भी गुणवत्तापरक शिक्षा हासिल कर सकते हैं, जो आर्थिक अभावों के कारण उत्कृष्ट शिक्षण संस्थानों में दाखिला नहीं ले सकते हैं।

यूट्यूब के इस प्रोजेक्ट से जुड़े ओबेदिया ग्रीनबर्ग कहते हैं कि शिक्षण संस्थाएँ हमेशा से इस तरह के किसी मंच की तलाश में थीं, जहाँ वे अपनी समकक्ष संस्थाओं के साथ मिलकर ज्ञान की खोज में अहम भूमिका निभा सकें।

कॉफी संग किताब

'कॉफी टेबल बुक' सुन कर ऐसा लगता है कि कड़क कॉफी के साथ एक अच्छी सी नॉवेल पढ़ने को मिली हो। बिल्कुल गलत सोच रहे हैं आप। यह एक ऐसी किताब है, जिसमें फोटो और इलस्ट्रेशन की भरमार होती है और शब्दों का इस्तेमाल बस इतना कि जितने में बात पाठकों की समझ में आ जाए। सच तो यह है कि 'कॉफी टेबल बुक' फोटो सम्पादक और सामग्री सम्पादक दोनों का मिला-जुला प्रयास होती है, लेकिन फोटो सम्पादक पर जिम्मेदारी अधिक होती है। भारत में पहले यह एयरलाइंस लाउंज, बड़े-बड़े रेस्त्रां, उच्च वर्ग लोगों के ड्राइंग रूम में ही उपलब्ध होती थी, लेकिन पढ़ने में काफी कम समय लगने के कारण अब यह आम लोगों के बीच भी लोकप्रिय होने लगी है।

अमेरिका की पर्यावरण संस्था सिएरा क्लब के एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर थे डेविड आर० ब्रॉवर। उन्होंने एक योजना बनाई कि क्यों न एक ऐसी किताब प्रकाशित की जाए, जिसमें कैमरे की सहायता से कैद किए गए प्रकृति के खूबसूरत नजारों को छापा जाए। इसके साथ ही मात्र कुछ शब्दों में चित्रों में दिखाए गए स्थान के बारे में बताया भी जाए। इससे न केवल लोग प्रकृति के बारे में जान पाएँगे, बल्कि वातावरण के प्रति जागरूक भी हो सकेंगे। ब्रॉवर की कल्पना के आधार पर 1960 में 'दिस इज द अमेरिकन अर्थ' नामक पहली 'कॉफी टेबल बुक' सामने आई। इसमें अंसल एडम्स के फोट्ग्राफ्स थे और नैंसी न्यूहॉल ने सामग्री लिखी। वर्ष 1980 में ब्रिटेन के दो कॉमेडी स्टार्स स्मिथ और जोंस ने 'स्मिथ एंड जोंस कॉफी टेबल बुक' बाजार में पेश की। इस किताब को ब्रिटेन के लोगों ने खूब पसंद किया। यहाँ तक कि कॉफी हाउसेज और बड़े-बड़े रेस्त्रां में ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए भी इस प्रकार की किताबें रखी जाने लगीं। भारत में भी इसी तर्ज पर इसकी शुरुआत हुई।

अधिक कीमत होने की वजह से कॉफी टेबल बुक की माँग भारतीय बाजारों में सीमित है। आज भारत और भारत से जुड़ी हर जानकारी जैसे इतिहास, पर्यटन, तीर्थ-स्थान, सेलिब्रिटीज आदि के बारे में दूसरे देशों के लोग ज्यादा जानना चाहते हैं। यही वजह है कि अमेरिका, ब्रिटेन सहित कई यूरोपीय देशों में भारतीय कॉफी बुक की जबर्दस्त माँग है।

'डेल्ही : इंडिया इन वन सिटी' नामक 'कॉफी टेबल बुक' के रचनाकार उदय सहाय के अनुसार, ''कॉफी टेबल बुक को कई चरणों में तैयार किया जाता है। पहले चरण में फोटो सम्पादक फोटो को संकलित करते हैं। दूसरे चरण में किताब का ले आउट या डिजाइनिंग की जाती है। तीसरे चरण में किताब का कंटेंट लिखा जाता है। दरअसल, अन्य किताबों की तुलना में, इसमें न केवल बुक-कवर, बल्कि सभी पन्नों का ले आउट और डिजाइनिंग की जाती है। इसीलिए कॉफी टेबुल बुक की कीमत ज्यादा होती है। कीमती होने के कारण ही यह केवल बड़ी दुकानों में उपलब्ध होती है।''

बड़े-बड़े शहरों में लोगों के पास इतना समय नहीं होता है कि वे मोटी-मोटी किताबों को पढ़ सकें। 'डेल्ही : कॉन्ट्रास्ट एंड कम्फ्लूएंशेज' के रचनाकार रघु राय का मानना है, ''फोटो देखकर ही हमें कभी-कभी जिन्दगी का दर्शन मिल जाता है। यदि आप फोटो देखते हैं, तो न केवल आपको विषय-वस्तु आसानी से समझ में आ जाती है, बल्कि वह बहुत दिनों तक याद भी रहती है। दूसरी ओर, जिन्दगी की भागदौड़ में हमें पढ़ने के लिए समय कहाँ मिल पाता है? ऐसी स्थिति में यह किताबें हमारे लिए सहायक साबित होती हैं।''

इंटरनेट पर हिन्दी साहित्य के एक लाख पृष्ठ होंगे उपलब्ध

हिन्दी नवजागरण के अग्रदूत हरिशचंद्र की रचनाओं से लेकर अब तक के सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य के एक लाख पृष्ठ इंटरनेट पर डाले जा रहे हैं ताकि देश-विदेश के हिन्दी प्रेमी घर बैठे पुस्तकों को पढ़ सकें। महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की मदद से पहली बार यह महत्त्वाकांक्षी योजना शुरू की है जिससे हिन्दी का सम्पूर्ण श्रेष्ठ साहित्य कम्प्यूटर पर क्लिक करते ही उपलब्ध हो जाएगा। यह साहित्य विश्वविद्यालय की वेबसाइट हिन्दी समय डॉट कॉम पर देखा जा सकेगा। विश्वविद्यालय के कुलपति विभूति नारायण राय ने बताया कि इस योजना के तहत जिन लेखकों का कॉपीराइट खत्म हो गया है, उनकी रचनाएँ वेबसाइट पर डाली जाएँगी।

पहली इंटरनेट लाइब्रेरी

पेरिस। दुनिया भर के प्रयोगकर्ता के लिए एक पुस्तकालय का उद्घाटन हाल ही में हुआ है। पेरिस (फ्रांस) में गत अप्रैल माह की 21 तारीख को यह उद्घाटन हुआ। पुस्तकालय से सांस्कृतिक विरासत को इंटरनेट पर उपलब्ध कराने का यह अनूठा अन्तर्राष्ट्रीय प्रयोग है। आप भी www.wdl.org पर जाकर दुनिया की सैकड़ों दुर्लभ पुस्तकें पढ़ सकते हैं। अमेरिकी कांग्रेस के वॉशिंगटन स्थित पुस्तकालय और मिस्र के एलेक्जेंड्रिया पुस्तकालय ने मिल कर इसे विकसित किया है। इसमें विश्व के 19 देशों का सहयोग है। यूनेस्कों के पेरिस कार्यालय से इसे लॉन्च किया गया।

इससे पूर्व 2004 में 'गूगल' ने ऐसा ही प्रोजेक्ट शुरू किया था। यूरोपीय संघ ने पिछले वर्ष नवम्बर माह में अपना डिजिटल पुस्तकालय शुरू किया था। यूनेस्को के नए पुस्तकालय में दुर्लभ पुस्तकें, मानचित्र, पाण्डुलिपियाँ और वीडियो उपलब्ध हैं। सामग्री अंग्रेजी के अलावा फ्रेंच, स्पेनिश, पुर्तगाली, रूसी तथा चीनी भाषा में उपलब्ध है।

यूजीसी द्वारा लागू नये नियम

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने शिक्षण संस्थानों में बेहतर शिक्षक सुनिश्चित करने के लिए लेक्चररशिप के नियम कड़े करने का फैसला किया है। इसके साथ ही आयोग पीएचडी के लिए भी देश भर में एक समान नियम लागू करेगा।

यूजीसी के अध्यक्ष प्रोफेसर सुखदेव थोराट के अनुसार अब लेक्चरर बनने के लिए पीजी और एम फिल डिग्री धारकों के लिए नेट या स्लेट परीक्षा पास करना अनिवार्य होगा। हालाँकि यूजीसी के नियमों के मुताबिक पीएचडी करने वालों को नेट या स्लेट पास करने से छूट मिलेगी।

उन्होंने कहा कि, ''अब से केवल उच्च मानकों के मुताबिक पीएचडी करने वालों को ही यूजीसी से मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटी और कालेजों में शिक्षक बनने के लिए नेट या स्लेट पास करने से छूट मिलेगी। एम फिल धारकों को नेट या स्लेट पास करना होगा।''

जल्द ही बच्चों के हाथों में होंगी विदेश में छपी किताबें

आपके बच्चों के हाथों में जल्द ही भारत की बजाय सिंगापुर, मलेशिया और चीन में छपी किताबें होंगी। केन्द्र सरकार की कागज नीति से परेशान देश भर के बड़े प्रकाशक अपनी किताबें छापने की इकाइयाँ विदेशों में स्थापित करने के बारे में सोचने के लिए मजबूर हो रहे हैं। कारण है कि सेफगार्ड ड्यूटी पर रोक लगाने जाने के बावजूद प्रकाशकों की मुश्किलें और किताबों की कीमतें कम नहीं हो पा रही हैं। क्योंकि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर कागज के दाम गिरने के बावजूद देसी कम्पनियों ने कागज की कीमतें बढ़ा दी हैं।

बड़े प्रकाशक तो विदेशों में इकाइयाँ लगाकर अपना कारोबार सुरक्षित कर लेंगे। लेकिन देश की 95 फीसदी प्रकाशन इकाइयों के ऊपर अब बंदी की तलवार लटक गई है। बल्कि इस काम से जुड़े चार-पाँच लाख से ज्यादा लोगों के सामने बेरोजगारी की स्थिति आने की आशंका भी बढ़ गई है।

देश के छोटे-बड़े 16 हजार से ज्यादा पब्लिशिंग हाउस इस समय अपना अस्तित्व बचाने के संकट से जूझ रहे हैं। देसी कागज मिलों द्वारा मनमाने दाम बढ़ाए जाने और सरकार द्वारा विदेशों से सस्ते कागज के आयात में बार-बार बाधाएँ खड़ी किए जाने के कारण यह स्थिति उत्पन्न हो रही है। दि फेडरेशन ऑफ पब्लिशर्स एंड बुकसेलर्स एसोसिएशन इन इंडिया के अध्यक्ष एस०सी० सेठी का कहना है कि भारत में विदेशों में छपी किताबें आयात करने पर कोई आयात शुल्क नहीं लगता। विदेशों से कागज के आयात पर पहले से ही 20 फीसदी आयात शुल्क लागू है। सेफगार्ड ड्यूटी लगाने और हटाने के बीच गत 1 मई से एक बार फिर देशी कम्पनियों ने अपने कागज की कीमतों में अनकोटेड पर डेढ़ रुपए और कोटेड पर दो रुपए प्रति किलो की बढ़ोत्तरी कर दी है। प्रकाशकों का कहना है कि किताबों की छपाई में 65 से 70 फीसदी तक की लागत केवल कागज की कीमत के रूप में आती है। चीन जैसे देशों में केवल कागज ही नहीं बल्कि अन्य संसाधन भी सस्ते पड़ते हैं।

अमेरिकी गुफाओं में संस्कृत

जर्मन भाषा वैज्ञानिक कुर्ट शिल्डमैन के अनुसार अमेरिका और पेरू की अनेक प्राचीन गुफाओं से प्राप्त शिलालेख प्राचीन संस्कृत में लिखे हुए हैं। इस नयी खोज से यह धारणा निर्मूल सिद्ध होती है कि अमेरिका की खोज कोलम्बस ने की थी, बल्कि यह कहना चाहिए कि भारतीयों के प्राचीन सम्बन्ध अमेरिका आदि देशों से थे। ये सारे शिलालेख कोलम्बस के पूर्व के हैं। इसी तरह की एक और खोज में अमेरिका के एक शहर की हवाईपट्टी के बगल में मिली कई कि०मी० लम्बी रहस्यमय 'नज्जा रेखायें' मिली हैं। इसमें प्रयुक्त धातु भारत में स्थित महरौली के लौह स्तम्भ की धातु से मिलती हैं। इस तरह के आज कई प्रमाणों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि आर्यों को बाहर से आया हुआ लुटेरा साबित करने की अंग्रेज इतिहासकारों की मानसिकता गलत तथा तथ्यहीन थी। लगभग नये शोधों से यह स्पष्ट हो चुका है कि महाभारत काल तक पूरा विश्व एक था। आर्य धर्म को मानने वाला था। महाभारत युद्ध में सबकुछ छिन्न-भिन्न होने के बाद लोग अपनी-अपनी सीमाओं में सिमटते गये और दूरियाँ बढ़ती गयीं। भारत के कम्युनिस्ट इतिहासकार जो अंग्रेजी नजरिये से इतिहास लिखते रहे हैं. उनकी भी दलीलें थोथी और बकवास लगने लगी हैं।

10वाँ बोई मेला : बाँग्ला पुस्तकों की प्रदर्शनी

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में पश्चिम बंगाल के मंडप में बंगाल एसोसिएशन के तत्त्वावधान में 10वें 'बोई मेला' (पुस्तक प्रदर्शनी) का आयोजन किया गया, जिसमें बाँग्ला भाषा के पचास प्रकाशकों ने भाग लेकर बड़ी संख्या में बाँग्ला साहित्य की कृतियों के साथ अनेक दुर्लभ कृतियाँ प्रदर्शित कीं।

प्रदर्शनी में इस वर्ष लेखिका लीला मजूमदार व आशापूर्णादेवी की जन्मशताब्दी के अवसर पर अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। यह प्रदर्शनी उक्त महान् लेखिकाओं को समर्पित थी।

संस्कृत की पढ़ाई भी अब ऑनलाइन

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) ने चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन के सहयोग से इंटरनेट की बढ़ती लोकप्रियता और इसके यूजर फ्रेंडली होने की वजह से संस्कृत विषय को ऑनलाइन पढ़ाने का निर्णय लिया है। इसके लिए 'सर्टिफिकेट कोर्स इन संस्कृत लैंग्वेज' नामक पाठ्यक्रम शुरू किया जाएगा।

सार्क देशों की डिजिटल लाइब्रेरी

सार्क देशों के बीच सूचना प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार और विदेश मंत्रालय के सहयोग से विज्ञान एवं तकनीक की डिजिटल लाइब्रेरी के बारे में दो दिवसीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इन प्रस्तावित लाइब्रेरी का उद्देश्य सार्क के सदस्य देशों को विज्ञान व तकनीक आधारित ज्ञान, सूचना और अनुसंधान के आदान-प्रदान के लिए एक व्यापक नेटवर्क से जोड़ना है।

इस सेमिनार में ख्यातिप्राप्त सूचना प्रौद्योगिकी के वैज्ञानिकों तथा सार्क देशों नेपाल, पाकिस्तान, भूटान, मालदीव, बाँग्लादेश आदि के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। संयोजक आईआईटी के निदेशक एम०डी० तिवारी थे।

फुटपाथ पर साहित्य के अनमोल रत्न

समय बदला। हालात बदले। लोगों की जरूरतें बदलीं। और वक्त के थपेड़ों ने महान लेखकों की कालजयी रचनाओं को ड्राइंग रूम से निकालकर फुटपाथ की दुकानों तक पहुँचा दिया है। जी हाँ, यह हकीकत है। कई ऐसी जगह हैं, जहाँ पुरानी किताबों की दुकानें सजती हैं। दुकानदार किलो के भाव में अदब और साहित्य के अनमोल खजाने खरीदते हैं। उन्हें तो मुनाफा होता ही है, टीवी चैनलों का मायाजाल चाहे कितना ही लोगों को कैद करे, साहित्य प्रेमियों की संख्या भी कम नहीं है और इन फुटपाथी दुकानों पर उन्हें कम कीमत पर मनचाही किताबें मिल जाती हैं।

प्रतिस्पर्द्धा और प्रोफेशनल कोर्स की आमद से युवा पाठक कुछ एक पत्रिका और सस्ते साहित्य तक सिमट कर रह गए हैं। आलम यह है कि पुरानी किताबें कबाड़ियों को बेची जा रहीं हैं। यही वजह है कि मुंशी प्रेमचंद, गालिब, गोर्की, दुष्यंत कुमार, मीर, कबीर समेत अनेक कालजयी रचनाकारों और अदबी शायरों की किताबें इन फुटपाथी दुकानों पर पहुँच गई हैं। कहना गलत नहीं होगा कि उर्दू अदब और साहित्य की हिफाजत पटरी के दुकानदार कर रहे हैं। जहाँ से आज भी इनके कद्रदान अपनी मनपसंद किताबें सस्ते दाम पर ले जारहे हैं। अनेक मशहूर हस्तियों की आत्मकथा इन दुकानों से साहित्य रसिक आज भी आधे दामों में ले रहे हैं। ऐसी ही दुकान चलाने वाले बताते हैं कि जो किताबें वह किलो के हिसाब से लेते हैं उसे खरीदने कभी कभार तो लोग कार तक से आते हैं। शोधार्थियों की तादाद उनकी दुकानों पर ज्यादा होती है।

पाठकों के पत्र

'भारतीय वाङ्मय' का मई 2009 का अंक प्राप्त हुआ, बहुत धन्यवाद। मरुस्थलवासियों को अचानक बारिश होने पर जितनी खुशी होती है, उससे भी अधिक खुशी मुझे आपकी पत्रिका के पहुँचने पर महसूस होती है। आप पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहिये जिससे हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अवश्य सहायता मिलेगी।

— B. K. Samuel, Tamilnadu

'भारतीय वाङ्मय' का अप्रैल 2009 का अंक प्राप्त हुआ। 'ये किताबें, उन्हें पढ़कर तनाव दूर करें, पुस्तक जीवन को आनन्दित करने के लिए ध्यान देने योग्य सामग्री है।' भाषा की मूलभूत आवश्यकता जरूरी है। 'शक्ति की करो मौलिक कल्पना' आधुनिक युग की सच्चाई को ध्यान से परखने की सीख देती है। ध्यान देना जरूरी प्रतीत होता है इस दृष्टि से हिन्दी प्रयोग पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

सम्मान और पुरस्कार अच्छी जानकारी देते हैं। पुस्तक परिचय संक्षिप्त होकर भी सारगर्भित है। पत्रिका की अन्य सामग्री भी पठनीय हैं। अंक अच्छा बन पड़ा है। बधाई के पात्र हैं।

—मदन मोहन वर्मा, ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

आपकी साहित्यिक पत्रिका 'भारतीय वाङ्मय' मई 2009 अंक प्राप्त हुई, धन्यवाद। वरिष्ठ पत्रकार श्री पुष्पेश पंतजी का आलेख देश की कड़वी सच्चाईयों से रूबरू करवाता है। सभी प्रस्तुतियाँ सामयिक सच्चाईयों का लेखा-जोखा हैं।

—आशुतोष श्रीवैष्णव, पाली, राजस्थान

'भारतीय वाङ्मय' अप्रैल 2009 अंक विविध जनोपयोगी सूचनाओं से सम्पन्न है। हिन्दी जगत की नवीनतम सूचनाएँ/सन्दर्भ/स्मरणांजलियों के सतत् सार्थक पुष्प गुच्छ भेंट करती यह पत्रिका सचमुच प्रशंसा की पात्र है। अत्र-तत्र-सर्वत्र में सम्पूर्णानन्द सं०वि० की पाण्डुलिपियों सम्बन्धी समाचार से स्व० पुरुषोत्तमदासजी मोदी की सूक्ष्म सूक्षबूझपरक वृत्ति याद आ रही है। स्मृति शेष स्तम्भ अनूठा है। सोलह पृष्ठीय सामग्री हिन्दी का अग्रदूत कहलाने की अधिकारी है ही। इसी प्रकार पत्रकारिता का स्तर बनाये रखें।

—श्रीमती विमला जैन, कटनी (मध्य प्रदेश)

'भारतीय वाङ्मय' अप्रैल 2009 का अंक प्राप्त हुआ। सदैव की भाँति प्रचुर सामग्री समेटे हुए है।

'शक्ति की करो कल्पना' तथा 'सर्वेक्षण' विचारोत्तेजक विचार हैं। लोग बिना विचारे भेड़ चाल चलते जाते हैं।

मुख पृष्ठ की कविता 'ये किताबें' के लिये लेखक (रचनाकार) साधुवाद का पात्र है।

— श्री धर पराड़कर
ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

'भारतीय वाङ्मय' नियमित रूप से मेरे पास आ रही है। उसके सम्पादकीय पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता है। आपके पिताजी आदरणीय श्री पुरुषोत्तमदासजी मोदी के सम्पादकीय लेखों में सामाजिक सरोकारों के प्रति जो पैनापन होता था तथा जो मौलिकता थी वह परम्परा उनके जाने के बाद आपने बखूबी संभाल ली है। युग की सामान्य विचारधारा के विपरीत मौलिक दृष्टि देना आज साहस और गहरे आत्मविश्वास के बिना सम्भव नहीं है। अप्रैल 2009 के 'भारतीय वाङ्मय' के अंक में 'स्लम डॉग मिलेनियर' को लेकर जो आपने विचार व्यक्त किये हैं वे एकदम सटीक और मौलिक हैं। वस्तुत: इस फिल्म में न कोई तीर है न कोई तुक्का है, न कोई सौन्दर्यबोध है और न कला है, फिर भी इस पर ऑस्कर पुरस्कारों की जो बरसात की गई है वह भारतीय अस्मिता को नीचा दिखाने का एक कुत्सित षडयन्त्र है। पिछले कुछ दशकों से भारत की प्रभुता और उसकी सफलता—खास तौर पर अर्थव्यवस्था तथा सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में—विश्व को प्रभावित करने लगी है। पश्चिम के उपनिवेशवादियों को भारत की यह चमक अच्छी नहीं लग रही है। इसलिये वे भारत के 'स्लम डॉग' चरित्र को पूरी शिद्दत के साथ उजागर करते हुए उसको पुरस्कारों से नवाजना चाहते हैं ताकि विश्व के ध्यान में अच्छी तरह आ जाये कि यही भारत की असलियत है तथा जो ऊपर की चकाचौंध दिख रही है, वह भ्रम है। उधर भारतवासी पुरस्कारों की इस खैरात से आत्ममुग्ध हैं और यह नहीं समझ पा रहे हैं कि ये पुरस्कार उनकी निकृष्टता का प्रदर्शन हैं। हाल की आर्थिक मन्दी में अमेरिका का आर्थिक रूप से महाविनाश होने पर भी तथा उस प्रक्रिया में उसकी बुद्धिमत्ता की सारी पोल खुल जाने पर भी हमारा अमेरिका के प्रति श्रेष्ठता तथा श्रद्धा का भाव इस बात का प्रमाण है कि सचमुच गुलामी भारतीयों के जहन में बहुत गहराई तक प्रवेश कर गई है।

अपने पिता की सारस्वत विरासत को आप न केवल जारी रख रहे हैं अपितु उसे समृद्ध भी कर रहे हैं। इस हेतु बधाई। **—डॉ० मोहन गुप्त**
कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत विश्वविद्यालय
उज्जैन (मध्य प्रदेश)

'भारतीय वाङ्मय' का अप्रैल अंक बहुत पहले मिल गया था। इस अंक को पढ़कर अपनी प्रतिक्रिया थोड़ा विलम्ब से दे रहा हूँ। समय के साथ 'भारतीय वाङ्मय' की यात्रा अविराम गति से चल रही है इसके लिये आप लोग साधुवाद के पात्र हैं। भारतीय वाङ्मय को सुन्दर तथा ज्ञानवर्धक बनाने में आप पूरी रुचि के साथ लगे हुए हैं, इसके लिये आपकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है। सम्पादकीय लेखन में तो आपका कोई मुकाबला नहीं है। सम्पादकीय के एक-एक स्तम्भ सामयिक तो हैं हीं अत्यन्त विचारोत्तेजक भी हैं। आपका एक स्तम्भ 'किताबें पढ़े तनाव दूर करें' आजकी दिशाहीन युवापीढ़ी के लिये एक संदेश है। काश! वे इसका कुछ तो अनुपालन कर पाते। डॉ० गिरिराज किशोर का आलेख 'थके हुए शब्दों का संग्रह नहीं है भाषा' नि:सन्देह आज के संवेदनशून्य होते जा रहे लोगों की आँख खोलने वाला है।

नि:सन्देह चेतावनीपरक और मार्गदर्शक आलेखों को समेटे, साहित्यिक गतिविधियों पर आधारित समाचार, महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की सूची, स्मृतिशेष आदि को समेटे भारतीय वाङ्मय अब हर हिन्दी साहित्य के प्रेमी अध्येता के लिये स्पृहणीय बन गया है। पत्रिका इसी प्रकार आगे बढ़ती रहे, यही कामना है।

— डॉ० आद्याप्रसाद द्विवेदी, गोरखपुर

'भारतीय वाङ्मय' के अप्रैल एवं मई अंक मेरे सामने हैं। अग्रलेखों का काव्य-पंक्तियों के सहारे सिरजा जाना, उनकी सहजता तथा ज्ञानात्मक-संवेदनों से जुड़ा महत्त्वपूर्ण है। 'किताबों में कॅरियर', 'यंत्र अनुवाद की समस्या और सम्भावना', 'अरे, ओ ययावर रहेगा याद' जैसी सामग्री की अपेक्षा हम आगामी अंकों में भी करेंगे। **—आशुतोष कुमार,** वाराणसी

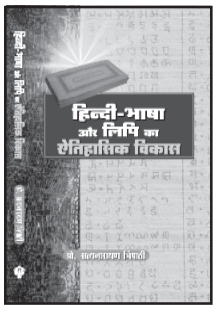

हिन्दी-भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास

प्रो० सत्यनारायण त्रिपाठी

पृष्ठ : 284

अजि. : रु० 90.00 ISBN : 978-81-7124-522-6

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

हिन्दी भाषा के ऐतिहासिक विकास को संतुलित रूप में प्रस्तुत करना इस कृति का लक्ष्य है। प्रारम्भ में संसार की भाषाओं के परिवेश में हिन्दी के महत्त्व का आकलन है और अन्त में विश्व की लिपियों के सन्दर्भ में देवनागरी लिपि का ऐतिहासिक विश्लेषण किया गया है। लेखक की दृष्टि में देवनागरी लिपि के वर्तमान संशोधित रूप का 'हिन्दी लिपि' नाम अधिक समीचीन है।

प्रत्येक प्रकरण के अन्त में निष्कर्ष हैं। इन निष्कर्षों से हिन्दी भाषा के अध्ययन का अधूरापन ध्वनित होता है। थोड़ा-बहुत जो अध्ययन हुआ भी है वह भी पर्याप्त प्रामाणिक सामग्री के अभाव में बहुत कुछ सन्दिग्ध है। इधर हिन्दी के राष्ट्रभाषा हो जाने से इसके अध्ययन का कार्य विशेष दायित्व और महत्त्व का हो गया है।

सम्मान-पुरस्कार

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के नए निदेशक

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग के प्रो० सुधाकर सिंह को केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का निदेशक नियुक्त किया गया है। यह निर्णय मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत शास्त्री भवन दिल्ली में हुई बैठक में लिया गया।

साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कार व पाण्डुलिपि अनुदान घोषित

5 जून को म०प्र० संस्कृति परिषद् ने वर्ष 2006 और 2007 के पुरस्कारों और पाण्डुलिपियों के अनुदान की घोषणा की। साहित्य अकादमी के निदेशक डॉ० देवेन्द्र दीपक ने बताया कि 'राष्ट्रीय माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार' क्रमश: डॉ० श्रीराम परिहार को उनके निबन्ध 'हंसा कहो पुरातन बात' और डॉ० विनय राजाराम को उनके निबन्ध 'तथैव च' के लिए दिया जाएगा। 'वीरसिंह देव पुरस्कार' (राशि 25 हजार) **श्रीमती नीरजा माधव** को उनके उपन्यास 'गेशे जंपा' और डॉ० महुआ माजी को उनके उपन्यास 'मैं बोरिशाइल्ला' के लिए; 'भवानीप्रसाद मिश्र पुरस्कार' डॉ० सुधेश को उनकी कविता 'जलती शाम' और श्री माताचरण मिश्र को उनकी कविता 'जंगल चुपचाप' के लिए; 'रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार' डॉ० देवेन्द्र राज अंकुर को उनकी आलोचना पुस्तक 'रंगमंच का सौन्दर्यशास्त्र' के लिए और 'मुक्तिबोध पुरस्कार' श्रीमती कमल कुमार को उनके कहानी-संग्रह 'घर-बेघर' के लिए दिया जाएगा। 'प्रादेशिक कहानी सुभद्राकुमारी चौहान पुरस्कार' क्रमश: श्रीमती सुषमा मुनींद्र को उनकी 'अस्तित्व' और श्री अनिल पाराशर को उनकी कहानी 'और रंग लौट आए' के लिए, 'श्रीकृष्ण सरल पुरस्कार' श्री कांतिलाल ठाकरे को उनकी कविता 'राधा की धारा' और श्री दिवाकर वर्मा को उनकी कविता 'सूर्य के वंशज सुनो' के लिए, 'दुष्यंत कुमार पुरस्कार', श्री अशोक जमनानी को उनकी पहली कृति 'को अहम' और श्री आलोक श्रीवास्तव को 'आमीन' के लिए दिया जाएगा। 'ईसुरी पुरस्कार' श्री बटुक चतुर्वेदी को लोकभाषा विषयक कृति 'बरखा बसंत' और श्री जगदीश जोशीला को उनकी कृति 'आद्धर सी हेट तक' के लिए दिया जाएगा।

प्रदेश के लेखक की पहली कृति के प्रकाशन अनुदान के अन्तर्गत 'बारहसिंगा का भूत' के लिए सुश्री इन्दिरा दांगी, 'क्या फर्क पड़ता है' के लिए श्री संजय जैन, 'नजरिया' के लिए सुश्री अनीता सिंह चौहान, 'लौटेगी नदी एक दिन' के लिए श्री दीपक पगारे, 'गुलदस्ता' के लिए श्री प्रमोद सोनी, 'सोचो खूब सोचो' के लिए श्री संजय परसाई सरल, 'कविता पाण्डुलिपि' के लिए सुश्री पूर्वा सांगलेकर, 'माटी की गुड़िया' के लिए सुश्री रेणु शर्मा और 'उसे मुझे फिर लौटा दो' के लिए श्री धीरेन्द्र गहलोत धीर की पाण्डुलिपि को अनुदान देने की घोषणा की गई है।

साहित्य अकादेमी द्वारा पाँच भाषाओं के अनुवाद पुरस्कार घोषित

12 जून को साहित्य अकादेमी ने हिन्दी सहित पाँच और भाषाओं के अनुवाद पुरस्कारों की घोषणा की। सुश्री मीनाक्षी शिवराम को राही मासूम रजा के हिन्दी उपन्यास 'टोपी शुक्ल' के इसी नाम से किए गए अंग्रेजी अनुवाद के लिए, श्री नीलाभ को अरुंधती राय के अंग्रेजी उपन्यास 'गॉड ऑफ स्माल थिंग्स' के हिन्दी अनुवाद 'मामूली चीजों का देवता' के लिए, श्री रूप कृष्ण भट को विभिन्न भाषाओं के कहानी संकलन के कश्मीरी में अनुवाद 'हिन्दुस्तानी अफसानी' के लिए, श्री ताराकांत झा को गोपीचंद नारंग की समालोचना पुस्तक के मैथिली अनुवाद 'संरचनावाद, उत्तर संरचनावाद एवं प्राच्य काव्यशास्त्र' के लिए और श्री ए०वी० सुब्रह्मण्यन को संगम कवि के तमिल भाषा के कविता-संग्रह के संस्कृत अनुवाद 'शृंगारपद्यावलि:' के लिए अनुवाद पुरस्कार-स्वरूप 20 हजार रुपये की राशि तथा उत्कीर्ण ताम्रपत्र दिया जाएगा। साहित्य अकादेमी की ओर से मान्यता प्राप्त सभी 22 भाषाओं के पुरस्कार विजेताओं को अकादेमी के अध्यक्ष श्री सुनील गंगोपाध्याय 20 सितम्बर को बंगलुरु में पुरस्कार प्रदान करेंगे।

मोरवाल को 'कथा सम्मान'

वर्ष 2009 का अन्तर्राष्ट्रीय इंदु शर्मा 'कथा सम्मान' सुपरिचित साहित्यकार श्री भगवानदास मोरवाल को उनके चर्चित उपन्यास 'रेत' के लिए प्रदान किया जाएगा। इस सम्मान के अन्तर्गत दिल्ली से लन्दन जाने-आने का व्यय, लन्दन में एक सप्ताह रहने की सुविधा, लन्दन के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण, यात्रा के दौरान आवश्यक अन्य खर्चे और शील्ड शामिल हैं। इन्दु शर्मा मेमोरियल ट्रस्ट के सचिव श्री तेजेन्द्र शर्मा ने बताया कि इस वर्ष का 'पद्मानंद साहित्य सम्मान' श्री मोहन राणा को उनके कविता संग्रह 'धूप के अँधेरे में' के लिए दिए जाने का निर्णय लिया गया है।

सूर्यबाला को वाग्मणि सम्मान

पिछले दिनों राजस्थान लेखिका साहित्य संस्थान एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केन्द्र के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रख्यात कथाकार एवं व्यंग्यकार **सूर्यबाला** को 'वाग्मणि सम्मान' से विभूषित किया गया। संस्थान की अध्यक्षा प्रो० पवन सुराणा ने कथाकार सूर्यबाला की रचनाधर्मिता पर एक संक्षिप्त एवं आत्मीय वक्तव्य देते हुए उनकी विदेशी परिवेश पर लिखी कहानी 'हे बाब इज़ दैट यू' तथा 'सुम्मी की बात' जैसी कहानियों के उदाहरण दिये। राजस्थान विश्वविद्यालय की भूतपूर्व विभागाध्यक्ष डॉ० सुदेश बहल ने सूर्यबाला के कथासंसार के वैविध्य रेंज एवं मर्मस्पर्शिता की चर्चा करते हुए उनकी चर्चित कहानियों 'बाउजी और बन्दर', 'होगी जय' तथा राजस्थानी परिवेश पर लिखी कहानी 'मटियाला तीतर' के उद्धरण प्रस्तुत किये। संस्थान की संस्थापिका श्रीमती नलिनी उपाध्याय ने सूर्यबाला के व्यंग्य कर्म पर प्रकाश डाला।

कथाकार सूर्यबाला ने उन्हें दिये 'वाग्मणि' सम्मान के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त किया तथा स्त्री-लेखन की गौरवशाली यात्रा पर प्रकाश डालते हुए कहा कि साहित्य लेखन के सामने आज सबसे बड़ी चुनौती देहवादी साजिशों से सावधान रहने की है। स्त्री विमर्श का अर्थ मात्र स्त्री शरीर और प्रेम के त्रिकोणों के चमत्कारी बयानों से न होकर, आज के बाहरी और आन्तरिक दबावों को झेलती स्त्री का मन, उसकी सोच और उसके सम्पूर्ण अन्तरंग और बहिरंग से है।

मुनरो को बुकर पुरस्कार

प्रतिष्ठित बुकर अवार्ड मशहूर लघु कहानी लेखिका, कनाडा की एलिस मुनरो को मिला है। तीसरा अन्तर्राष्ट्रीय मैन बुकर अवार्ड पाकर खुश

11वें आचार्य निरंजननाथ सम्मान हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित

साहित्यिक पत्रिका 'सम्बोधन' द्वारा प्रति वर्ष दिया जाने वाला सम्मान इस वर्ष कविता विधा पर दिया जाएगा।

पुरस्कृत रचनाकार को इक्कीस हजार रुपये नकद, शाल, स्मृति चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया जाएगा।

इस 11वें अखिल भारतीय पुरस्कार हेतु गत पाँच वर्षों (2004-2008) में प्रकाशित कविता पुस्तक की तीन प्रतियाँ 15 अगस्त 2009 तक लेखक, प्रकाशक या कोई भी शुभचिंतक—निम्न पते पर भेज सकते हैं।

पुरस्कार का निर्णय 2009 में ही कर दिया जाएगा। निर्णायक मण्डल का निर्णय अन्तिम एवं मान्य होगा।

कमर मेवाड़ी, संयोजक, आचार्य सम्मान-2009, सम्बोधन, कांकरोली-313324 (जिला-राजसमंद) राजस्थान

अंबिका प्रसाद दिव्य पुरस्कारों हेतु कृतियाँ आमन्त्रित

स्व० अंबिका प्रसाद दिव्य की स्मृति में साहित्य सदन, भोपाल द्वारा प्रदान किए जाने वाले राष्ट्रीय ख्याति के दिव्य पुरस्कारों हेतु रचनाकारों से कृतियाँ आमन्त्रित हैं। अपनी प्रविष्टि 30 नवम्बर, 2009 तक श्रीमती राजो किंजल्क, साहित्य सदन, 145-ए, साँईनाथ-सी, महावीर नगर कोलार, भोपाल-462042 के पते पर भेज सकते हैं।

77 वर्षीय मुनरो ने कहा, ''मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि पुरस्कार के लिए मेरा नाम आया है।'' मुनरो को पुरस्कार के रूप में 60 हजार पौंड (करीब 45 लाख 80 हजार रुपये) मिलेंगे। यह पुरस्कार हर दो साल में साहित्य के क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले किसी साहित्यकार को दिया जाता है।

डॉ० भवानीलाल भारतीय शहीद राजपाल डी०ए०वी० सम्मान से सम्मानित

अभिव्यक्ति के अधिकार की रक्षा के लिए स्वयं का बलिदान करने वाले महाशय राजपाल (प्रसिद्ध प्रकाशन राजपाल एण्ड संस के संस्थापक) की स्मृति में दिये जाने वाला शहीद राजपाल डी०ए०वी० सम्मान प्रसिद्ध लेखक व साहित्यकार **डॉ० भवानीलाल भारतीय** को प्रदान किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए कर्नाटक के भूतपूर्व राज्यपाल श्री टी०एन० चतुर्वेदी ने डॉ० भारतीय के बहुविध लेखन पर विस्तार से प्रकाश डाला। सम्मान में नकद राशि (25 हजार) के अतिरिक्त उत्तरीय, स्मृति चिह्न तथा अभिनन्दन पट्टिका (सरस्वती के चित्र से अंकित) भी भेंट की गई।

डॉ० एन० सुन्दरम् सम्मानित

कमला गोइन्का फाउण्डेशन, मुम्बई ने 2008-09 के लिए प्रेसिडेन्सी कालेज, मद्रास (मद्रास विश्वविद्यालय) के पूर्व प्रोफेसर व द०भा०हि० प्रचार सभा, चेन्नई के कर्मठ प्रचारक 80 वर्षीय **डॉ० एन० सुन्दरम** को उनकी तमिल एवं हिन्दी साहित्य की सेवा के लिए 'गोइन्का सारस्वत सम्मान' से सम्मानित किया है। डॉ० सुन्दरम की हिन्दी एवं तमिल में मौलिक सम्पादन, आलोचना व अनुवाद की लगभग चालीस कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा; केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, नई दिल्ली, उनकी साहित्यिक सेवा के लिए हिन्दीतर भाषी राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित कर चुके हैं। इसी क्रम में उनकी 80वीं वर्षगाँठ पर भाषा संगम, चेन्नई ने भी उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर 'सुन्दर सौरभं' ग्रन्थ का लोकार्पण किया गया।

दिनेश कुमार शुक्ल को केदार सम्मान

समकालीन हिन्दी कविता के महत्त्वपूर्ण कवि, **दिनेश कुमार शुक्ल** को उनके कविता संकलन 'ललमुनिया की दुनिया' के लिए वर्ष 2008 का 'केदार सम्मान' देने का निर्णय लिया गया है।

गुजरात के हिन्दी महर्षि डॉ० नागरजी का सम्मान

डॉ० अम्बाशंकर नागरजी का सम्मान गुजरात विद्यापीठ के अहिंसा शोध भवन में कुलनायक प्रो० सुदर्शन आयंगार की अध्यक्षता एवं कुलसचिव डॉ० राजेन्द्र खीमाणी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। गुजरात में हिन्दी की जड़ों को मजबूत करनेवालों में से डॉ० नागर एक हैं। नागरजी स्व० रामलाल परीख भाषा-संस्कृति संस्थान के वर्षों तक निदेशक रहे। नागरजी के साथ डॉ० रामकुमार गुटन और श्री शिवानन्द जोशीजी को भी अंगवस्त्र से सम्मानित किया गया। इस 'सम्मान-समारोह' का आयोजन महादेव देसाई समाज सेवा महाविद्यालय, गुजरात विद्यापीठ की प्रिन्सिपल प्रो० मालती दुबे ने किया।

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के पुरस्कारों की घोषणा

नई दिल्ली। भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने अपने रजत जयन्ती वर्ष के शुभावसर पर वर्ष 2009 के डॉ० अम्बेडकर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों की घोषणा की है। भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर ने बताया कि डॉ० अम्बेडकर अन्तर्राष्ट्रीय परस्कार के लिए डॉ० पद्मेश गुप्ता के नाम का चयन किया है। इंग्लैण्ड निवासी डॉ० पद्मेश गुप्ता प्रवासी भारतीय हैं और छठा विश्व हिन्दी सम्मेलन, यू०के० (लंदन) के वे संयोजक थे। उनके प्रयत्नों से ही उस सम्मेलन में हिन्दी में दलित साहित्य विषय रखा गया था और वहीं से ही विश्व धरातल पर दलित साहित्य को पहचान मिली।

डॉ० पद्मेश गुप्ता प्रसिद्ध साहित्यकार, पत्रकार और समाजसेवी हैं। वे इंग्लैण्ड से 'पूरवाई' नाम से हिन्दी में व 'प्रवासी टुडे' अंग्रेजी पत्रिका निकालते हैं जो भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रचार करती हैं।

इसके अलावा निम्नलिखित व्यक्तियों का दलितोत्थान क्षेत्र में की गई विशिष्ट सेवाओं के लिए डॉ० अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कारों के लिए चयन किया गया है— **डॉ० अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार** (दलितोत्थान कार्यों के लिए)—(1) श्री छगन भुजबल (उपमुख्यमंत्री महाराष्ट्र), (2) डॉ० चन्दु मस्के (राष्ट्रीय अध्यक्ष बामसेफ, नई दिल्ली), (3) डॉ० राजकुमार (सुप्रसिद्ध न्यूरो सर्जन, संजय गांधी पी०जी०आई० लखनऊ (उत्तर प्रदेश), (4) श्री आर०के० पोरिया (समाजसेवक, हरियाणा प्रदेश)। **दलित साहित्य के लिए—**(1) डॉ० सुखदेव थोरात (अध्यक्ष, यू०जी०सी० विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली), (2) डॉ० हरिनारायण ठाकुर (साहित्यकार मुजफ्फरपुर (बिहार), (3) डॉ० जे०आर० सोनी (महासचिव गुरू घासीदास साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, छत्तीसगढ़, रायपुर), (4) श्री आर०एल० प्रदीप (आई०ए०एस०-सेवानिवृत्त) कवि एवं दलित साहित्यकार, (पंजाब), **दलित लोक कला—**(1) श्री सुभाष हनुमन्त कानडे (लोक कलाकार सिरसी, कनार्टक), **दलित पत्रकारिता—**(1) श्री दीपचन्द्र खाण्डेगर (प्रधान सम्पादक-अम्बेडकर वाणी इन्दौर, मध्य प्रदेश)

भारतीय दलित साहित्य अकादमी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ० सोहनपाल सुमनाक्षर ने बताया कि इन सभी महानुभावों को दलितों की उत्कृष्ट सेवाओं के लिए अकादमी के रजत जयन्ती उत्सव के समय नई दिल्ली में आयोजित 25वें राष्ट्रीय दलित साहित्यकार सम्मेलन में शील्ड, प्रशस्ति पत्र व शाल से सम्मानित किया जायेगा।

हिन्दी अकादमी द्वारा 287 युवा तथा 33 नवोदित लेखकों का सम्मान

विगत दिनों हिन्दी अकादमी द्वारा फिक्की सभागार में आयोजित एक समारोह में दिल्ली के विद्यालय व महाविद्यालय स्तर पर आयोजित विभिन्न विधाओं की प्रतियोगिता में चुने गए 287 प्रतिभागी युवाओं को पुरस्कृत किया गया। इन प्रतियोगिताओं में करीब छह हजार युवाओं ने हिस्सा लिया था। पुरस्कार वितरण लीलाधर मंडलोई, डॉ० अर्चना वर्मा, धनंजय सिंह तथा सुरजीत सिंह ने किया।

त्रिवेणी सभागार में आयोजित एक अन्य कार्यक्रम में हिन्दी अकादमी द्वारा 33 नवोदित लेखकों को सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय साहित्य सम्मान

साहित्य और कला के प्रति समर्पित भोपाल की प्रख्यात सांस्कृतिक संस्था 'रवीन्द्र अम्योचर नाट्य ग्रुप' के तत्त्वावधान में भारत भवन के विशाल प्रेक्षागृह में आयोजित एक भव्य समारोह में सोनभद्र जनपद निवासी उत्तर प्रदेश के लोकप्रिय कवि/शायर एवं आध्यात्मिक पत्रिका दिव्य प्रभा के प्रधान सम्पादक मुनीर बख़्श 'आलम' को सुविख्यात संत स्वामी अड़गड़ानन्द महाराज द्वारा गीता पर लिखी विश्वविख्यात टीका 'यथार्थ गीता' का 'हक़ीक़ी गीता' नाम से देवनागरी लिपि में उनके द्वारा किये गये उर्दू अनुवाद के लिए 'स्वामी अवधेशानन्द राष्ट्रीय साहित्य सम्मान 2008' से सम्मानित किया गया। 2007 के लिए उक्त सम्मान मध्य प्रदेश के कवि/कथाकार ध्रुव शुक्ल को उनकी कृति—'हरे राम' के लिये प्रदान किया गया, सम्मान स्वरूप प्रशस्ति पत्र, श्री फल, अंगवस्त्रम् एवं ग्यारह हजार रुपये की मानद धनराशि से नवाजा गया।

डॉ. जगन्नाथ प्रसाद बघेल सम्मानित

मुम्बई। मुम्बई निवासी छन्द-विद्या के वरिष्ठ कवि-साहित्यकार डॉ० जगन्नाथ प्रसाद बघेल को 'अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा', द्वारा काव्य विधा में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए 'कविवर मैथिली शरण गुप्त सम्मान' प्रदान किया गया है।

घनश्याम 'अमृत' सम्मानित

विगत दिनों भोपाल की कला और संस्कृति को समर्पित प्रतिष्ठित संस्था कला मन्दिर द्वारा अपने वार्षिक सम्मान समारोह में नगर के युवा रचनाकार

श्री घनश्याम मैथिल 'अमृत' को उनके निबन्ध संग्रह 'धूलभरी आँधियों के बीच' पाण्डुलिपि के लिए 'गद्य पाण्डुलिपि पवैया पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। डॉ० देवेन्द्र दीपक तथा डॉ० श्यामसुन्दर दुबे ने उन्हें शॉल, श्रीफल, स्मृति-चिह्न एवं प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।

डॉ० शत्रुघ्न प्रसाद को राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास लेखन, समसामयिक विषयों पर विश्लेषण एवं कविता के माध्यम से अपना विशिष्ट स्थान बनाने वाले डॉ० शत्रुघ्न प्रसाद को मध्यप्रदेश शासन ने हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उपन्यास लेखन एवं समालोचना के माध्यम से इतिहास एवं समय के गम्भीर प्रश्नों के रेखांकन तथा विश्लेषणात्मक विवेचन के लिए राष्ट्रीय मैथिलीशरण गुप्त सम्मान 2007-08 से सादर विभूषित किया है।

डॉ० रमानाथ त्रिपाठी को साहित्य शिरोमणि सम्मान-2009

डॉ० रमानाथ त्रिपाठी को सुसाहित्यिक एवं समाज-सेवापरक कृतित्व, भाषाओं के प्रति विशेषनिष्ठ, रचनाकर्म में विशेष अनुराग और साहित्य की श्रीसम्पदा में श्रीवृद्धि में महत्त्वपूर्ण उल्लेखनीय योगदान के लिए अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच ने 'त्रिवेणी कला संगम' नई दिल्ली में आयोजित बसंत उत्सव सम्मेलन में श्री त्रिपाठीजी को पूर्व राज्यपाल भीष्मनारायण सिंह के करकमलों से साहित्य शिरोमणि सम्मान-2009 से सम्मानित कर अभिनन्दित किया।

डॉ० शांति जैन राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान से विभूषित

पारम्परिक संस्कृति के क्षेत्र में अपने सुदीर्घ सृजनात्मक लेखन एवं गायन आदि की बहुआयामी विधाओं में लगभग पाँच दशक से सक्रिय सुविख्यात लेखिका डॉ० शांति जैन को मध्यप्रदेश शासन ने लोक साहित्य एवं संगीत के क्षेत्र में विगत चार दशकों की निरन्तर साधना, अभिव्यक्ति में आंचलिक सौन्दर्य और संस्कारों की प्रभावमयी अभिव्यक्ति तथा मूल्यांकनपरक सृजनात्मक कार्यों के लिए राष्ट्रीय देवी अहिल्या सम्मान 2007-08 से सादर विभूषित किया है।

डॉ० (श्रीमती) बिनय षडंगी राजाराम को 'हरिहर निवास द्विवेदी' पुरस्कार

मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से भोपाल स्थित हिन्दी भवन में आयोजित हिन्दी सेवी सम्मान समारोह-2008 के अन्तर्गत मध्य प्रदेश के राज्यपाल डॉ० बलराम जाखड़ ने हिन्दीतर भाषी की हिन्दी में प्रकाशित पुस्तक के लिए सम्मान राशि सहित शॉल, श्रीफल, और प्रतीक चिह्न भेंट करके ओड़िया मातृभाषी डॉ० (श्रीमती) बिनय षडंगी राजाराम को सम्मानित किया। भारत भवन की न्यासी रहीं डॉ० बिनय राजाराम कवियित्री, कथाकार, बौद्ध-ईसाई साहित्य की अध्येता एवं हिन्दी की प्राध्यापक हैं। 2008 के प्रकाशनों में से उनके निबन्ध संग्रह 'तथैव च' को 'हरिहर निवास द्विवेदी' पुरस्कार के लिए चुना गया। अध्यक्षता न्यायमूर्ति श्री डी०एस० धर्माधिकारी ने की।

राजकुमार सचान 'होरी' साहित्यश्री-2008 सम्मान से अलंकृत

बहुविधा रचनाकार एवं काव्य मंचों के जाने-माने कवि राजकुमार सचान 'होरी' को हिन्दी उर्दू साहित्य अवार्ड कमेटी (उत्तर प्रदेश) द्वारा साहित्यश्री 2008 सम्मान प्रदान किया गया। संस्थान ने अपने 20वें सम्मान समारोह में हिन्दी उर्दू के चुने गए 11 रचनाकारों को यह सम्मान प्रदान किया गया। ये सम्मान सुप्रसिद्ध फिल्मकार व शायर गुलजार तथा साहित्य अकादमी के पूर्व अध्यक्ष प्रो० गोपीचंद नारंग द्वारा प्रदान किए गए। सम्मान स्वरूप अंगवस्त्र, स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पत्र व नकद राशि प्रदान की गई।

महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के पुरस्कार

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे के संचालक श्री जयराम गं० फगरे को हिन्दी की समर्पित सेवाओं के लिए विगत दिनों मुम्बई में महाराष्ट्र शासन के संस्कृति विभाग द्वारा संचालित महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी के 'पद्मश्री अनंत गोपाल शेवडे' पुरस्कार से फिल्मी दुनिया के जानेमाने गीतकार पद्मभूषण गुलजार के करकमलों द्वारा सम्मानित किया गया।

वर्तमान परीक्षा मन्त्री श्री वामन पाटील को 'गजानन माधव मुक्तिबोध : मराठी भाषी हिन्दी लेखक' पुरस्कार से तथा राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के राष्ट्रभाषा महाविद्यालय के पूर्व अध्यापक एवं स्वतन्त्रता सेनानी श्री सुदर्शन कुमार शाह को 'छत्रपति शिवाजी राष्ट्रीय एकता' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

सभी को पुस्कार स्वरूप 51,000/- (इक्यावन हजार रुपए), शाल-श्रीफल, सम्मान-पत्र, स्मृति-चिह्न तथा पुष्पगुच्छ प्रदान किया गया।

किताबें

ये किताबें संभाल कर रखिए
रत्ननिधि से निखार कर रखिए
गन्ध महकेगी इन किताबों की
आग दहकेगी इन किताबों की
ये सतत साधना अमर फल हैं
इनके भीतर अमिट उजाला है
नीति-नवनीत का निवाला है।

—अजयकुमार श्रीवास्तव
खलीलाबाद, सन्त कबीर नगर

एक परिचर्चा बच्चों के साथ

पिछले कुछ दिनों से परिचर्चाओं की बाढ़ सी आ गई है। हमारी अर्थव्यवस्था से लेकर मामूली पेट-दर्द तक के कारणों की खोज हो रही है और ये निष्कर्ष निकल रहे हैं कि इन सबका कारण पिछली सरकार की गलत नीतियाँ रही हैं। मैंने सोचा कि जब प्राय: सभी तबकों के लोगों से परिचर्चा हो चुकी है तो क्यों न बच्चों की भी एक परिचर्चा हो जाए। जनतंत्र में बच्चों का महत्व कम नहीं होता। बल्कि यों कहें कि बच्चों की रोकथाम को लेकर ही जनतंत्र का उद्धार हो सका है, तो गलत नहीं होगा। सभाओं और रैलियों में भी वयस्क लोगों की अपेक्षा बच्चों की ही भीड़ अधिक रहती है।

बहरहाल, एक रविवार मैंने बच्चों के लिए सुरक्षित रख दिया। परिचर्चा मेरे घर के डाइनिंग हाल में हुई तथा कॉफी, केक और आइस्क्रीम के साथ जमती चली गई।

परिचर्चा का प्रथम सदस्य था—चिरंजीव बंसीलाल। उम्र दस साल। दोहरा बदन, एक गाल पर तिल तथा दूसरे पर जले का निशान। कपड़े लत्तों से सम्पन्न परिवार का लगता था। हँसमुख तथा गपोड़िया लगने वाले बंसीलाल से मैंने पूछा— ''समाचारपत्र में तुम्हारे पिताजी की जेल की डायरी छप रही है। बड़ा ही दर्दनाक वर्णन है।''

''जी हाँ। मेरे पिताजी कोई सस्ता काम नहीं करते। जो भी काम करेंगे बस ए वन। यह डायरी भी उन्होंने 'ए वन' राइटर से लिखवाई है।''

तुम्हारे पिताजी किस सिलसिले में बन्द थे?

''सिलसिला तो वही पुराना ही था, लेकिन हर बार की तरह इस बार सिलसिला कुछ जमा नहीं और पिताजी अन्दर हो गए।''

''क्या वे क्रान्ति के परचे बाँट रहे थे'' मैंने पूछा।

''जी नहीं। उनका विदेशों से कारोबार चलता था—स्मगलिंग का''।

''तो वे स्मगलिंग में गिरफ्तार थे? यह तो बहुत बुरा काम है, बेटे।''.....

—शेष विवरण जानने के लिए पढ़ें

स्वर्ग का उल्लू

ना०वि० सप्रे

मूल्य : रु० 100.00,

प्राप्ति स्थान

विश्वविद्यालय प्रकाशन
चौक, वाराणसी

स्मृति-शेष

पं० विश्वनाथ शास्त्री दातार का तिरोधान

काशी की पाण्डित्य परम्परा की एक और कड़ी टूट गई। मीमांसा, न्याय और प्राचीन राजशास्त्र-अर्थशास्त्र के प्रकांड विद्वान **पं० विश्वनाथ शास्त्री दातार** का 27 जून 2009 की शाम साढ़े पाँच बजे ब्रह्माघाट स्थित आवास पर निधन हो गया। वह 88 वर्ष के थे। संस्कृत में उच्चकोटि के कार्यों के लिए उन्हें वर्ष 1990 में राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। वह प्राचीन राजशासत्र के शिक्षक के तौर पर सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय से जुड़े थे जहाँ से वर्ष 1981 में सेवानिवृत्त हुए। मणिकर्णिका घाट पर हुए दाह संस्कार में मुखाग्नि उनके एकमात्र पुत्र सिद्धेश्वर दातार ने दी।

पं० शास्त्री ने कुँवर अनन्त नारायण सिंह को पुराण प्रवचन के माध्यम से दीक्षा दी थी। लाल बहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ (नई दिल्ली) द्वारा 15 फरवरी 1994 में महामहोपाध्याय की उपाधि तथा विद्याभूषण, उडुपी मदुराचार्य तंजावर पुरस्कार मिला। उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान (लखनऊ) से 1984 में वेद पण्डित व 2002 में विशिष्ट पुरस्कार मिला। इसी क्रम में म०म०पं० सदाशिव मुसलगाँव स्मृति पुरस्कार, 2004 में महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार, राजस्थान के वीर हनुमान मन्दिर की ओर से 2001 में पौरोहित्य कर्मकाण्ड पुरस्कार सहित कोलकाता के मेहता न्यास समूह, काशी विद्यापीठ, साहित्य संगीत परिषद-काशी, संस्कृत भारती सहित विभिन्न संस्थाओं से भी कई पुरस्कार उन्हें मिले थे। आपने अनेक ग्रन्थ भी लिखे। अध्ययन अध्यापन में रुचि होने के कारण घर पर संस्कृत पाठशाला भी संचालित करते थे।

विलीन हो गया इन्द्रधनुष

विख्यात नाटककार व रंगकर्मी **हबीब तनवीर** ने सोमवार 8 जून 2009 को तड़के भोपाल में आखिरी साँस ली। 85 वर्षीय तनवीर पिछले कुछ दिनों से बीमार थे।

1 सितम्बर, 1923 को रायपुर में पैदा हुए हबीब ने बतौर पत्रकार कॅरियर शुरू किया था। बाद में वह थियेटर की दुनिया के अनमोल रत्न के रूप में सामने आए। 'आगरा बाजार' व 'चरणदास चोर' नाटकों से मशहूर हुए तनवीर ने भोपाल में 1959 में अपनी पत्नी मोनिका मिश्रा (अभिनेत्री और निर्देशिका) के साथ मिलकर 'नया थियेटर' शुरू किया। इस थियेटर के जरिये उन्होंने कई लोक कलाकारों को राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय मंच प्रदान किया। तनवीर ने कई फिल्मों की पटकथा लिखी व कुछ फिल्मों में अभिनय भी किया। वह कविता भी करते थे।

नाटक के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के लिए उन्हें 1969 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1983 में पद्मश्री, 1996 में संगीत नाटक अकादमी फेलोशिप और 2002 में पद्मभूषण सम्मान मिला। 1972-78 तक वह राज्य सभा के सदस्य भी रहे।

तनवीर के कुछ प्रमुख नाटक—आगरा बाजार (1954), शतरंज के मोहरे (1954), लाला शोहरत राय (1954), मिट्टी की गाड़ी (शुद्रक रचित संस्कृत नाटक मृच्छकटिकम पर आधारित) (1958), चरणदास चोर (1975), उत्तर रामचरित (1977), बहादुर कलारिन (1978), पोंगा पंडित, जिन लाहौर नई वेख्यां (1990), जहरीली हवा (2002), राज रक्त (2006)।

लेखिका कमला दास नहीं रहीं

अंग्रेजी और मलयालम की जानी-मानी लेखिका **कमला दास सुरैया** का पुणे के जहाँगीर अस्पताल में रविवार, 31 मई 2009 को निधन हो गया। 75 वर्षीय सुरैया कुछ समय से बीमार चल रही थीं।

कविता और कहानियों पर समान अधिकार रखने वाली सुरैया की 'माई स्टोरी' का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी किया जा चुका है। सुरैया ने मलयालम में माधवीकुट्टी के नाम से कई लघु कथाएँ भी लिखी हैं। उनका जन्म केरल में त्रिशूर जिले के पुन्नायारकुलम के नलप्पड़ परिवार में हुआ था। अपनी बेबाक राय के लिए जानी जाने वाली कमला सुरैया 1999 में इस्लाम धर्म ग्रहण करने के बाद काफी विवादों में घिर गई थीं। कुछ साल पहले वे पुणे में जा बसी थीं।

अस्त हुए आदित्य/गुर्जर/पुरी

सड़क हादसे में तीन जाने-माने कवि दुनिया से विदा हो गए। **ओमप्रकाश आदित्य, लाड़सिंह गुर्जर** और **नीरज पुरी** बेतवा उत्सव के दौरान कवि सम्मेलन में भाग लेकर विदिशा से भोपाल को लौट रहे थे।

5 नवम्बर, 1936 को रणसीम (गुणगाँव) हरियाणा में जनमे आदित्य ने अनेक देशों की यात्राएँ कीं। उनकी प्रसिद्ध हास्य व्यंग्य कृतियाँ हैं—'इधर भी गधे हैं, उधर भी गधे हैं', 'तोता ऐंड मैना', 'मॉडर्न शक्ति', 'घट-घट व्यापी भ्रष्टाचार', 'उल्लू का इंटरव्यू', 'अस्पताल की टाँग'। उन्हें काका हाथरसी हास्य पुरस्कार, ठिठोली, हरियाणा गौरव, हास्य सम्राट्, हास्य शिरोमणि सहित छोटे-बड़े दर्जनों पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

लगभग 50 वर्ष के श्री लाड़सिंह गुर्जर शाजापुर के बनजारी गाँव में जनमे तथा शासकीय विद्यालय में शिक्षक रहे, विद्यार्थी जीवन से ही मालवी लोकगीतों से काव्य-साधना प्रारम्भ की, बाद में ओज रस की कविता करने लगे, कुछ व्यंग्यात्मक कविताएँ भी लिखीं।

45 वर्ष के श्री नीरज पुरी बैतूल के निवासी थे। वे बैंक में कार्यरत थे और हास्य-व्यंग्य के परिचित कवि तथा मंच पर धूम मचानेवाली कविताएँ करते थे।

हास्य-व्यंग्य के सुपरिचित कवि उज्जैन के निवासी श्री ओम व्यास तथा लगभग 25 वर्ष के युवा कवि जॉनी बैरागी भी इस सड़क दुर्घटना में घायल हुए हैं।

हिन्दी अकादमी ने की 'आदित्य पुरस्कार' की घोषणा

11 जून को दिल्ली की स्वास्थ्य मंत्री डॉ० किरण वालिया ने प्रसिद्ध हास्य-व्यंग्य कवि श्री ओमप्रकाश आदित्य को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि वे आम आदमी के कवि थे। उन्होंने कहा कि मालवीय नगर की किसी एक सड़क का नाम उनके नाम पर रखा जाएगा। हास्य कवि श्री अशोक चक्रधर ने कहा कि काव्य मंच पर आदित्यजी की क्षतिपूर्ति नहीं हो सकती। दिल्ली साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री महेशचंद्र शर्मा ने कहा कि आदित्यजी की स्मृति में हिन्दी अकादमी की ओर से प्रतिवर्ष एक हास्य कवि को 'आदित्य पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। गीतकार श्री कुँवर बेचैन ने कहा कि उन्हें छन्द-शास्त्र का पूर्ण ज्ञान था। वे किसी पर हँसते नहीं थे, बल्कि सबके साथ-साथ हँसते थे। श्री सुरेन्द्र शर्मा ने कहा कि आदित्य अपनी रचनाओं के माध्यम से सदैव जीवित रहेंगे।

प्रो० कमर रईस का निधन

सुप्रसिद्ध प्रगतिशील शायर व साहित्यकार **प्रो० कमर रईस** का 29 अप्रैल को निधन हो गया। वह 77 साल के थे। उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार उत्तर प्रदेश के जन्मस्थान शाहजहाँपुर में दफनाया गया। प्रो० रईस ताशकंद में पाँच साल तक इंडियन कल्चर सेंटर के डायरेक्टर रहे। बाद में वह दिल्ली यूनिवर्सिटी के लेक्चरर रहे। उन्हें यूजीसी ने नेशनल लेक्चरर के सम्मान तथा 2001 में ताशकंद यूनिवर्सिटी ने पी-एच०डी० की मानद उपाधि से सम्मानित किया था।

चन्द्रकिरण सौनरेक्सा का निधन

जानी-मानी वयोवृद्ध लेखिका **चन्द्रकिरण सौनरेक्सा** का अवसान साहित्य की क्षति है। उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियों, चार उपन्यास, कविता, नुक्कड़ नाटक और बाल साहित्य द्वारा साहित्य को समृद्ध किया। साहित्य-सेवा के लिये उन्हें 'सारस्वत सम्मान', 'सुभद्रा कुमारी चौहान पदक' एवं हिन्दी अकादमी दिल्ली द्वारा सम्मानित किया गया। उनकी रचनाएँ भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी, रूसी, चेक, हंगेरियन भाषाओं

में अनूदित हुई हैं। विदेशों के हिन्दी पाठ्यक्रम में उनकी रचनाएँ आज भी पढ़ाई जाती हैं।

शंभूनाथ मिश्र का निधन

संगीत के स्वर और साधकों की बारीकियों को अपनी लेखनी से उजागर करने वाले **शंभूनाथ मिश्र** का 24 मार्च को निधन हो गया। वह 71 वर्ष के थे। 17 मई, 1938 को बिहार के दरभंगा जिले के गाँव नारायणपुर में जन्मे शंभूनाथ मिश्र भारत सरकार पत्र-सूचना कार्यालय से निदेशक पद से सेवानिवृत्त हुए और स्वतंत्र लेखन में प्रवृत्त थे। काव्य-संग्रह 'है, नहीं है' तथा एक संकलन 'स्वप्नविध' तथा साजों की कहानी आदि उनकी उल्लेखनीय कृतियाँ हैं। वह उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान से सम्मानित थे।

प्रो० जबरनाथ पुरोहित का निधन

शिक्षा व साहित्य क्षेत्र के अग्रणी एवं यशस्वी कवि **प्रो० डॉ० जबरनाथ पुरोहित** का 24 फरवरी को हृदयाघात से निधन हो गया। वह 75 वर्ष के थे। शिक्षा व साहित्य से सम्बन्धित आपकी 64 पुस्तकें प्रकाशित हैं। आपको राजस्थान साहित्य अकादमी के सर्वोच्च सम्मान-मीरा सम्मान सहित अनेक सम्मान प्राप्त थे।

अल्हड़ बीकानेरी नहीं रहे

नई दिल्ली। जाने-माने हास्य कवि **अल्हड़ बीकानेरी** का बुधवार, 17 जून 2009 को तड़के नोएडा के एक अस्पताल में निधन हो गया। सांस की तकलीफ के चलते 72 वर्ष के बीकानेरी अस्पताल में भर्ती थे। वे अपने पीछे पत्नी, तीन बेटे व दो पुत्रियाँ छोड़ गए हैं।

बीकानेरी का जन्म 17 मई, 1937 को हरियाणा के जिला रेवाड़ी अन्तर्गत गाँव बीकानेर में हुआ। उन्होंने गजल, हास्य-व्यंग्य के माध्यम से हिन्दी साहित्य की अनुपम श्रीवृद्धि की। उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं—'भज प्यारे तू सीताराम', 'अब तो आँसू पोंछ', 'भैंसा पीवे सोमरस', 'अनछुए हाथ', श्रेष्ठ हास्य कविताओं के लिए उन्हें ठिठोली पुरस्कार, काका हाथरसी सम्मान, राष्ट्रपति सम्मान, टेपा पुरस्कार, हरियाणा गौरव सम्मान सहित अनेक पुरस्कार-सम्मानों से अलंकृत किया गया।

जीवितराम सेतपाल का निधन

पिछले दिनों मुंबई से प्रकशित त्रैमासिक पत्रिका 'प्रोत्साहन' के प्रेरणास्रोत एवं प्रबंध सम्पादक, कवि-विचारक **श्री जीवितराम सेतपाल** का निधन हो गया। महाराष्ट्र-क्षेत्र में हिन्दी-गौरव की मशाल जलाने वाले श्री सेतपालजी का आकस्मिक अवसान एक राष्ट्रीय क्षति है।

डॉ० प्रतीक मिश्र का दुःखद निधन

स्वनामधन्य गीतकार साहित्यश्री **डॉ० प्रतीक मिश्र** का सहारनपुर में आयोजित श्रीकृष्ण शलभ द्वारा सम्पादित 'बचपन एक समुन्दर' काव्य कृति के विमोचन समारोह में जाते हुए रेलयात्रा में आकस्मिक निधन हो गया। इस समाचार से सम्पूर्ण आगरा के साहित्य जगत में शोक व्याप्त हो गया।

आचार्य रामनाथ 'सुमन' नहीं रहे

विगत 15 अप्रैल को संस्कृत के अग्रणी विद्वान्, शिक्षाविद् तथा साहित्य मनीषी आचार्य **रामनाथ 'सुमन'** का पिलखुवा स्थित अपने निवास-स्थान पर निधन हो गया। 20 जुलाई, 1926 को धौलाना (गाजियाबाद) में जनमें 83 वर्षीय आचार्य 'सुमन' उ०प्र० संस्कृत अकादमी के अध्यक्ष रहे थे। सन् 2000 में उन्हें अग्रणी संस्कृत विद्वान् के नाते राष्ट्रपति ने पुरस्कृत किया था। वर्ष 2001 में उ०प्र० संस्कृत अकादमी का 51 हजार रुपए का पुरस्कार तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री राजनाथ सिंह के कर-कमलों द्वारा दिया गया था।

कवि मनोहर लाल 'रत्नम' का निधन

17 मई को हास्य-व्यंग्य कवि **श्री मनोहर लाल 'रत्नम'** का दिल्ली में निधन हो गया। वह अपने पीछे एक पुत्र व एक पुत्री छोड़ गए हैं। 14 मई, 1948 को जनमे श्री मनोहरलाल ने 31 से अधिक पुस्तकों की रचना की, जिसमें उनका कविता संग्रह 'जिन्दा रावण बहुत पड़े हैं' बेहद लोकप्रिय हुआ। उनकी उत्कृष्ट लेखनी से उन्हें शोभना अवार्ड, साहित्य शिरोमणि, साहित्यश्री व काव्यश्री जैसे सम्मानों से सम्मानित किया गया।

'भारतीय वाङ्मय' परिवार की ओर से दिवंगत आत्माओं को विनम्र श्रद्धांजलि।

किताबों की बातें

● दुनिया की जनसंख्या जितनी तेजी से बढ़ रही है, उससे कहीं ज्यादा तेजी से किताबें प्रकाशित हो रही हैं। आँकड़े देखिए, लगभग 1.6 प्रतिशत प्रतिवर्ष की रफ्तार से जहाँ जनसंख्या बढ़ रही है, वहीं किताबों के छपने की रफ्तार है 2.8 प्रतिशत प्रतिवर्ष।

● आप किसी भी बुक-स्टोर में चले जाइए, आप एक सरसरी नजर में वहाँ रखी किताबों पर नजरें दौड़ा सकते हैं। लेकिन जरा सोचिए एक ऐसे बुक स्टोर के बारे में जो लगभग 21 किमी क्षेत्र में फैला हो। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं दुनिया के सबसे बड़े बुक-स्टोर 'बारनंस एंड नोबेल बुकस्टोर' की। यह न्यूयार्क सिटी, यूएसए में स्थित है।

● वाशिंगटन डीसी, यूएसए में स्थित 'द लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस' दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है (किताबों की संख्या और शेल्फ के आधार पर)। यहाँ बुक-शेल्फ इतने विशाल दायरे में रखे हुए हैं कि इसे कवर करने के लिए वाहन की मदद लेनी पड़ती है। बिना रुके सत्तर कि०मी० की रफ्तार से चलकर आप इस पूरे एरिया को कुल आठ घंटे में कवर कर सकेंगे।

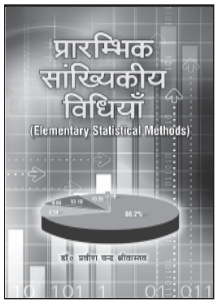

प्रारम्भिक सांख्यिकीय विधियाँ

डॉ० प्रवीण चन्द्र श्रीवास्तव

आकार : 18.5 x 24.5 cm

पृष्ठ : 284

सजि. : रु० 280.00 ISBN : 978-81-7124-632-8

अजि. : रु० 180.00 ISBN : 978-81-7124-633-5

प्रकाशक : विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

जीवन का शायद ही ऐसा कोई पक्ष हो जिसमें सांख्यिकी का उपयोग न होता हो। वास्तव में सांख्यिकी ज्ञान का एक ऐसा भण्डार तथा साधन है, जो मानव जीवन को अनेक बिन्दुओं पर स्पर्श करता है तथा प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है। वस्तुत: सांख्यिकी एक वैज्ञानिक पद्धति है जिसके द्वारा किसी समस्या की तह तक पहुँचने तथा उसका हल ज्ञात करने में सहायता प्राप्त होती है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रमुख सांख्यिकीय विधियों को अति सहज तथा सुबोध शैली में उदाहरणों के माध्यम से इस प्रकार प्रस्तुत किया गया है कि विषय-वस्तु को आसानी से आत्मसात किया जा सके। पुस्तक में सांख्यिकीय विधियों के उन सभी रूपों का समावेश किया गया है जो विविध स्तरों के विद्यार्थियों तथा शोधकर्त्ताओं हेतु अत्यन्त उपयोगी है। पुस्तक में विषय-वस्तु को 14 खण्डों में विभक्त किया गया है। प्रथम अध्याय में सांख्यिकी : एक सम्प्रत्यात्मक ढाँचा, द्वितीय तथा तृतीय अध्याय में प्रदत्तों के व्यवस्थापन तथा उनका आरेखीय एवं आलेखीय निरूपण, चतुर्थ अध्याय में केन्द्रीय प्रवृत्ति के माप, पाँचवें अध्याय में विचलनशीलता के माप तथा छठे अध्याय में सापेक्षिक स्थिति के विभिन्न मापों की चर्चा की गई है। सातवें अध्याय में सामान्य वितरण तथा उसके उपयोग, आठवें अध्याय में प्रसामान्यता से विचलन, नवें अध्याय में सहसम्बन्ध विश्लेषण, दसवें अध्याय में विभिन्न सांख्यिकीय मापों की सार्थकता एवं विश्वसनीयता की परख, ग्यारहवें अध्याय में प्रायोगिक परिकल्पनाओं का परीक्षण, बारहवें अध्याय में प्रसरण-विश्लेषण, तेरहवें अध्याय में काई-वर्ग परीक्षण तथा चौदहवें अध्याय में प्रमापीकृत प्राप्तांकों पर चर्चा की गई है। पुस्तक के अन्त में महत्त्वपूर्ण सांख्यिकीय तालिकाएँ प्रस्तुत की गई हैं। इस प्रकार यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण सांख्यिकीय विधियों को समाहित करते हुए अपने में एक पूर्ण पुस्तक है जो शिक्षाशास्त्र, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान तथा गृह विज्ञान के स्नातक तथा स्नातकोत्तर छात्रों व शोधार्थियों हेतु अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

संगोष्ठी/लोकार्पण

कबीर प्राकट्य महोत्सव
'भोजपुरी और हिन्दी' का लोकार्पण

काशी को संत कबीरदास की जन्म एवं कर्मस्थली होने का गौरव प्राप्त है। उनके 611वें प्राकट्य दिवस पर चारों ओर से कबीरदास के अनुयायी यहाँ एकत्र हुए। एक ओर कबीरदास के जन्मस्थल लहरतारा पर स्थित मन्दिर में उत्सव मनाया गया तो दूसरी ओर सिद्धपीठ कबीरचौरा मठ मूलगादी ट्रस्ट के तत्त्वावधान में कबीर उद्भव स्थल लहरतारा में चल रहे तीन दिवसीय कबीर जयंती के दूसरे दिन 'वैश्विक सन्दर्भ और संत कबीर के विचार' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो० अवध राम ने कहा कि कबीर अनुभव व संघर्ष के प्रतीक संत थे। अध्यक्षता करते हुए संत विवेकदास आचार्य ने कहा कि संत कबीर भारतीय भक्ति आन्दोलन के सबसे तेजस्वी, निर्भीक और व्यापक दृष्टि वाले संत थे। संगोष्ठी में प्रो० दीपक मलिक, डॉ० श्रद्धानंद, डॉ० गया सिंह, विजयशंकर पाण्डेय, प्रो० अवधेश प्रधान, प्रो० सदानंद शाही, हरीश दास, भगवन्ती सिंह, चितरंजन सिंह, डॉ० निखत परवीन, लक्ष्मण मिश्र, विवेक जायसवाल आनंद दास व भागीरथ आदि ने भी विचार व्यक्त किए। इस दौरान स्व० डॉ० शुकदेव सिंह की विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी से प्रकाशित पुस्तक 'भोजपुरी और हिन्दी' तथा संत विवेकदास आचार्य द्वारा रचित 'कबीर पाठ' का लोकार्पण किया गया। संचालन प्रो० सुरेन्द्र प्रताप ने किया।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान में आंतरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी

विगत दिनों भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून के राजभाषा अनुभाग द्वारा '25वीं आंतरिक हिन्दी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन किया गया।

डॉ० मधुकर ओंकारनाथ गर्ग, निदेशक, भापेसं ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। संगोष्ठी का संचालन करते हुए संस्थान के वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी एवं संयोजक डॉ० दिनेश चमोला ने कहा कि विज्ञान के लोकप्रियकरण की शृंखला में आज ऐसे विज्ञान सचेतकों की आवश्यकता है जों स्वाभिमानपूर्वक अपनी भाषा एवं आंचलिक भाषाओं में उसका प्रचार-प्रसार करें। विज्ञान सम्मत दृष्टि विकसित करने तथा गूढ़ रहस्यों एवं वैज्ञानिक जानकारियों को हिन्दी में प्रसारित करने से ही युवा पीढ़ी में मौलिक विज्ञान चिंतन व लेखन को बल मिल सकता है। वैज्ञानिक उपलब्धियाँ तब तक निष्प्राण हैं, जब तक वे भाषाई कवच से प्राणवान होकर अपने गंतव्य तक नहीं पहुँचतीं। विचारों की मौलिक व प्रभावी अभिव्यक्ति अपनी भाषा में ही सम्भव है। संगोष्ठी सत्र में विभिन्न वैज्ञानिक विषयों पर प्रभावी प्रस्तुतियाँ दी गयीं।

अगर राममनोहर लोहिया होते

संवेदनहीन होते समाज में आज डॉ० राममनोहर लोहिया होते तो शायद युवाओं को अपना 'रोल मॉडल' मिल जाता। उनके संस्मरणों पर आधारित पुस्तक 'यदि डॉ० राममनोहर लोहिया होते तो' का विमोचन करते हुए अतिथियों ने यह बात कही। पुस्तक का सम्पादन हिस्लॉप कॉलेज के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० ओमप्रकाश मिश्र ने किया है। उन्होंने चौबीस हस्तियों के अनुभवों को पुस्तक में शामिल किया है। इनमें छोटी-छोटी घटनाओं का उल्लेख है, जिनके माध्यम से लोहिया के चरित्र की बारीकियाँ स्पष्ट होती हैं।

महादेवी वर्मा की विश्वदृष्टि

नई दिल्ली के लाजपत नगर स्थित टैगोर हॉल में इंडो-जापान एसोसिएशन फॉर लिटरेचर एण्ड कल्चर एवं जापान फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित भारत-जापान साहित्य मिलन कार्यक्रम के अन्तर्गत तोमोको किकुचि की पुस्तक 'महादेवी वर्मा की विश्वदृष्टि' का लोकार्पण किया गया। प्रो० मैनेजर पाण्डेय ने अध्यक्षीय संबोधन में दो अलग-अलग संस्कृतियों वाले देशों के बीच साहित्यिक और वैचारिक आदान-प्रदान के ऐसे कार्यक्रम की सराहना की। कवि कुँवर नारायण, प्रो० निर्मला जैन तथा चित्रा मुद्गल आदि ने लेखिका को बधाई देते हुए कहा कि इस शोध में महादेवी वर्मा के बारे में कई नए तथ्य उद्घाटित किए गए हैं, इस दृष्टि से यह एक महत्त्वपूर्ण शोध है।

इस अवसर पर जापान फाउंडेशन के डायरेक्टर जनरल नाव एटो, जापान दूतावास के निदेशक कीजिरी उचियामा विशेष रूप से उपस्थित थे।

समवेत कविता

हिन्दी अकादमी, दिल्ली का 'समवेत कविता' का पहला कार्यक्रम त्रिवेणी सभागार में सम्पन्न हुआ। अकादमी के सचिव डॉ० ज्योतिष जोशी ने कहा कि आधुनिक कविता को कुछ आलोचक उसके 'स्वर्ण काल' की संज्ञा दे रहे हैं तो कुछ आलोचक उसमें एक ही अनुगूँज, दोहराव, वर्तमान हलचलों को पकड़ने में असफल बता रहे हैं। इस कार्यक्रम के जरिए हम नयी कविता की 'बहुमुखी' और 'अन्तर्मुखी' दोनों यात्राओं और उसकी परम्परा के बुनियादी सिद्धान्तों की नाप-तोल करना चाहते हैं। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता पंकज सिंह ने की।

'कीर्ति छवि' फिल्म समारोह

दिल्ली के त्रिवेणी सभागार में आयोजित हिन्दी अकादमी के 'कीर्ति छवि' फिल्म समारोह का उद्घाटन दिल्ली की भाषा मन्त्री डॉ० किरण वालिया ने किया। उनका कहना था कि आज की भाग-दौड़ भरी जिन्दगी में साहित्यकारों का सृजन ही सुकून के कुछ पल उपलब्ध कराता है, अत: ऐसे साधकों के व्यक्तित्व और कृतित्व को युवा पीढ़ी तक पहुँचाने का कार्य उन पर बनी फिल्में बहुत अच्छी तरह कर सकती हैं। समारोह में हिन्दी अकादमी, साहित्य अकादमी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान और एन०सी०ई०आर०टी० द्वारा निर्मित दस फिल्में दिखाई गईं। यह फिल्में— आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, डॉ० रामविलास शर्मा, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, देवेन्द्र सत्यार्थी, नागार्जुन, कमलेश्वर, त्रिलोचन और विष्णु प्रभाकर के व्यक्तित्व और उनके रचनाकर्म पर केन्द्रित थीं।

'इन दिनों'

हिन्दी अकादमी, दिल्ली की नयी योजना के अन्तर्गत त्रिवेणी सभागार में 21 अप्रैल, 2009 को आयोजित 'इन दिनों' नामक शृंखला की पहली कड़ी का शुभारम्भ वरिष्ठ कथाकार राजेन्द्र यादव के अन्तरंग संवाद से हुआ। कथाकार राजेन्द्र यादव ने कहा कि—''विचारधारा के आधार पर बनाया जाने वाला समाज नृशंसतापूर्ण है। विचार हमारे सोचने को निर्धारित और सीमित करता है। हमारे समय में एक बड़ा सवाल यह है कि क्या भविष्य का नक्शा बनाने और नया समाज गढ़ने में विचारधारा हमारी कोई मदद नहीं करती है। श्री यादव विचारधारा के आवेश को अपनी रचना प्रक्रिया का प्रमुख अंग मानते रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस समय समाज को प्रभावित कर रही चीजें दूसरी हैं। हम लोग अपना भविष्य गैरजरूरी किस्म की बौद्धिकताओं में तलाशते हैं, जबकि हमारे पीछे बहुत बड़ा समाज बदल रहा है। शक्ति के केन्द्र बदल रहे है। वे 'अपने पीछे से गुजरते हुए' हमें दिखाई नहीं दे रहे।''

कार्यक्रम के आरम्भ में अकादमी के सचिव डॉ० ज्योतिष जोशी के सम्पादन में निकली हिन्दी अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका 'इन्द्रप्रस्थ भारती' के पहले अंक (जुलाई-दिसम्बर, 2008) का लोकार्पण नामवर सिंह, राजेन्द्र यादव, अशोक वाजपेयी और अर्चना वर्मा ने किया। पत्रिका का यह अंक नया कलेवर लिए हुए है जिसमें महत्त्वपूर्ण सामग्री संकलित है।

आचार्य शुक्ल के 125वें जयंती वर्ष पर संगोष्ठी

वाराणसी। **प्रख्यात आलोचक प्रो० नामवर सिंह** ने कहा कि **आलोचना के लिए** सहृदय अर्थात समान हृदय का होना निहायत जरूरी है। इसमें अपने **हृदय की भावना का विस्तार होना चाहिए।** कवि के संस्कार बड़े ही प्रबल होते हैं। आचार्य शुक्ल ने तमाम संस्कारों के विरुद्ध संघर्ष

करते हुए आलोचना अनुशासन को सहृदयता से जोड़ा। उनके जैसा काव्य अनुशासन अन्य आलोचकों में कम ही मिलता है।

प्रो० सिंह विगत दिनों उदय प्रताप कॉलेज के पुस्तकालय सभागार में प्रगतिशील लेखक संघ व हिन्दी विभाग की ओर से आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के 125वें जयंती वर्ष पर आयोजित संगोष्ठी में बतौर मुख्य वक्ता बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आचार्य शुक्ल पर दलित विरोधी व ब्राह्मणवादी होने के आरोप लगते रहे हैं। इसका रामविलास शर्मा ने तुलसीदास की रचनाओं का हवाला देते हुए खण्डन भी किया है। उन्होंने कहा कि आचार्य शुक्ल निर्गुण के विरोधी व सगुण के पक्षधर थे और अपने विचारों को बिना किसी लाग-लपेट के सामने लाते थे। ज्ञान समीक्षा का वास्तविक वैभव उनके जायसी सम्बन्धी विवेचन में मिलता है। आचार्य शुक्ल के साहित्य में काव्य अनुशासन था। हिन्दी के प्राचीन से लगायत आधुनिक साहित्य का उन्होंने गहरा अध्ययन किया था। संस्कृत व अंग्रेजी साहित्य भी उनसे अछूते नहीं थे। इनका उद्धरण वे अपनी रचनाओं में देते रहते थे। अध्यक्षता यूपी कॉलेज के प्राचार्य डॉ० ओमप्रकाश सिंह ने की। स्वागत प्रो० चौथीराम यादव, विषय स्थापना प्रो० राजेन्द्र कुमार, संचालन डॉ० गोरखनाथ व धन्यवाद ज्ञापन डॉ० संजय ने किया।

जापान में हिन्दी की गूँज

तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज़, जापान ने भारतीय दूतावास तोक्यो, जापान के संयुक्त तत्त्वावधान में हिन्दी-उर्दू शिक्षण का शताब्दी समारोह बहुत भव्य रूप में मनाया। विश्व के अनेक देशों के लगभग 40 विद्वानों ने इसमें भाग लिया। विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस का प्रतिनिधित्व इस सम्मेलन में सचिवालय की महासचिव डॉ० विनोद बाला अरुण ने किया।

सम्मेलन के आयोजन में आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रो० ताकेशि फुजिइ और सह अध्यक्ष प्रो० युताका असादा के साथ ही साथ संयोजक प्रो० सुरेश ऋतुपर्ण की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। प्रो० ऋतुपर्ण तोक्यो यूनिवर्सिटी ऑफ फॉरेन स्टडीज, जापान में हिन्दी के अतिथि प्राध्यापक हैं। भारत के राजदूत महामहिम श्री हेमंत कृष्णसिंह ने सम्मेलन का उद्घाटन किया और प्रो० ताकेशि फुजिइ, सम्मेलन के अध्यक्ष और हिन्दी-विभागाध्यक्ष ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया। अपने सम्बोधन में महामहिम ने कहा कि संख्या की दृष्टि से हिन्दी विश्व की एक अग्रणी भाषा है।

इस सम्मेलन में छः शैक्षिक सत्रों का आयोजन किया गया था। शैक्षिक सत्रों की संरचना विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी-शिक्षण की आवश्यकताओं के अनुरूप की गयी थी। प्रथम सत्र का विषय था—'हिन्दी-उर्दू शिक्षण का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' (अमेरिका के विशेष सन्दर्भ में) जिसकी अध्यक्षता विश्व हिन्दी सचिवालय की महासचिव डॉ० विनोदबाला अरुण ने की। अन्य वक्ता थे—अमेरिका के प्रो० हरमन वान ऑल्पेन, प्रो० जिश्नूशंकर और प्रो० सैयद अकबर हैदर।

दूसरा सत्र था—'हिन्दी उर्दू शिक्षण का वैश्विक परिप्रेक्ष्य' (यूरोप के विशेष सन्दर्भ में)। इसकी अध्यक्षता की प्रो० हरमन वान ऑल्फेन ने और प्रमुख वक्ता थे—पोलैंड की प्रो० दानुता स्तशिक, दक्षिण कोरिया के प्रो० आलोक रॉय, जर्मन की प्रो० तात्याना ओरांस्काया और मॉरीशस की डॉ० विनोद बाला अरुण।

तीसरे सत्र में—'जापान में हिन्दी-उर्दू शिक्षण' पर चर्चा हुई। इसमें वक्ता थे—प्रो० हिदेआकि इशिदा, प्रो० तेइजी सकाता, प्रो० योइचि युकिशिता, प्रो० हिरोको नागासाकी, प्रो० सुहेल अहमद खान, प्रो० मामिया केन्साकु, प्रो० यास्मीन सुल्ताना नकबी, प्रो० केई शिराई और प्रो० सुरेश ऋतुपर्ण और अध्यक्ष थे—प्रो० सैयद अकबर हैदर। जापानी हिन्दी विद्वानों के उच्चारण और भाषा कौशल को सभी ने खूब सराहा। सभी विद्वानों ने जापान में हिन्दी-उर्दू सिखाते समय आने वाली कठिनाइयों का और उनके समाधान का बड़ा रोचक विवरण दिया।

चौथे सत्र का विषय था—'हिन्दी-उर्दू शिक्षण में सूचना-प्रौद्योगिकी की उपयोगिता एवं कोश-निर्माण'। अमेरिका के प्रो० जिश्नूशंकर की अध्यक्षता में भारत के श्री बालेंदु दाधीच, प्रो० अश्विनी कुमार श्रीवास्तव, श्री नारायण कुमार और पाकिस्तान के प्रो० रऊफ पारेख ने अपने-अपने विचार रखे।

पाँचवा सत्र—'विदेशी भाषा के रूप में हिन्दी-उर्दू शिक्षण : चुनौतियाँ एवं समाधान' को समर्पित था। अध्यक्षा थीं—पोलैंड की प्रो० दानुता स्तशिक और प्रमुख वक्ता थे—पाकिस्तान के प्रो० मुइनउद्दीन अक़ील और प्रो० तहसीन फिराकी, भारत के प्रो० हरजेंद्र चौधरी, प्रो० अरुण चतुर्वेदी और प्रो० हरीश नवल।

छठे और अन्तिम सत्र—'हिन्दी सिनेमा, नाटक एवं अन्य जन संचार माध्यमों का हिन्दी-उर्दू शिक्षण में योगदान' में जापान के प्रख्यात रंगकर्मी व दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र रहे प्रो० तोमिओ मिजोकामी, सुश्री मिवाको कोएजुका, श्री अखिल मित्तल, लोकप्रिय कवि डॉ० कुंवर बेचैन और पाकिस्तान की सुश्री फातिमा सुरैया ने अपने-अपने मत प्रस्तुत किए। अध्यक्षता की—तोक्यो के चर्चित नाटककार और उर्दू के व्याख्याता प्रो० युताका असादा ने। विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं—प्रो० तोमिओ मिज़ोकामि जिन्होंने देश-विदेशों में 100 नाटक प्रस्तुत किए हैं और जिनकी हिन्दी सुनकर दंग रह जाना पड़ता है। मॉरीशस में 2004 में उन्होंने नाटक प्रस्तुत किये थे।

सभी वक्ताओं ने एक स्वर में स्वीकार किया कि फिल्मों, नाटकों और अन्य जन संचार माध्यमों का हिन्दी-उर्दू शिक्षण में बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है।

मैथिली-भोजपुरी अकादमी

नई दिल्ली। विगत दिनों मैथिली-भोजपुरी अकादमी द्वारा राष्ट्रीय भोजपुरी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मंच का संचालन मैथिली-भोजपुरी अकादमी के सचिव डॉ० रविंद्रनाथ श्रीवास्तव द्वारा किया गया। कार्यक्रम का आयोजन अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ० अनिल मिश्र ने किया। डॉ० शम्सुर्रहमान फारुखी ने पहले सत्र का उद्घाटन करते हुए कहा कि आज पूर्वांचल के लोग दूसरे राज्यों में जाकर अपनी भाषा भूलते जा रहे हैं या फिर उनकी भाषा मात्र घर तक ही सीमित होकर रह गई है। पहले सत्र में डॉ० सिद्धार्थ शिवशंकर, प्रभुनाथ पाण्डे, डॉ० रविंद्र श्रीवास्तव, डॉ० नागेंद्र प्रताप सिंह व प्रो० गोपेश्वर सिंह ने भी इस विषय पर अपने विचार रखे। दूसरे सत्र का उद्घाटन व अध्यक्षता प्रख्यात भोजपुरी निबन्धकार डॉ० आशा रानी लाल ने की।

दूसरे दिन के मैथिली के कार्यक्रम में प्रथम सत्र में 'समकालीन रचनाकार का रचनात्मक दायित्वबोध' विषय पर प्रो विद्यानाथ झा विदित की अध्यक्षता में डॉ० शेफालिका वर्मा, डॉ० मेघन प्रसाद, प्रदीप बिहारी और डॉ० देवशंकर नवीन ने अपने वक्तव्य दिए।

अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा सम्मेलन

झाँसी के राजकीय संग्रहालय ऑडिटोरियम में 'हम सब साथ-साथ' के तत्त्वावधान में 'अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा सम्मेलन-2009' का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि डॉ० श्याम सिंह 'शशि' ने अपने सम्बोधन में कहा कि ''भारतीय भाषाओं के समन्वय में हिन्दी का विशेष योगदान है। अत: हिन्दी के प्रचार-प्रसार की अधिक आवश्यकता है, जिस पर बल दिया जाए।'' नार्वे से पधारे हिन्दी विद्वान डॉ० सुरेशचन्द्र शुक्ल ने हिन्दी के बढ़ते प्रभाव और इसके विश्व भाषा बनने की दिशा में किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की। दिल्ली के रामप्रसाद खेड़ा, विनोद बब्बर और गाजियाबाद के सुभाष चंदर आदि ने अपने विचार रखे। अध्यक्षता वयोवृद्ध विद्वान् जानकी शरण वर्मा ने की।

समारोह में चित्तौड़गढ़ के साहित्यकार राजकुमार जैन 'राजन' सहित अनेक विद्वानों को 'राष्ट्रभाषा सम्मान' से सम्मानित किया गया।

बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि की चुनौतियाँ

नई दिल्ली में नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा 'बच्चों के साथ विज्ञान आधारित संप्रेषण की चुनौतियाँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में राष्ट्रीय विज्ञान और तकनीकी संचार परिषद् के निदेशक डॉ० मनोज पटैरिया तथा डॉ० विजय काम्बले आदि ने परिचर्चा में भाग लेते हुए

कहा कि बच्चे वैज्ञानिक प्रवृत्तियों के साथ ही पैदा होते हैं, लेकिन विज्ञान विशेषज्ञों के सामने वह चुनौती है कि वह बढ़ते बच्चों में इस प्रवृत्ति और रुझान को जिंदा रखें। विशेषज्ञों ने कहा कि विज्ञान विषय पर लिखते समय लेखक को भाषा सरल रखनी चाहिए, यह भी ध्यान रखना चाहिए कि जिस विषय पर वे लिख रहे हैं उसका मर्म और मूल भाव बना रहे।

नार्वे की बाल पुस्तकें हिन्दी में

नई दिल्ली के राष्ट्रीय बाल भवन में मेखला झा सभागार में बाल भवन, ए एंड ए बुक ट्रस्ट तथा नार्वे के दूतावास के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समारोह में नार्वे की चार बाल पुस्तकों के हिन्दी रूपान्तरों का विमोचन किया गया। समारोह में नार्वे के राजदूत एन ऑलने स्टेड तथा दूतावास की प्रथम सचिव सुश्री एन्ने लीज भी उपस्थित थीं। इन पुस्तकों का हिन्दी अनुवाद ए एंड ए बुक ट्रस्ट की ट्रस्टी अरुंधती देवस्थले ने किया।

तेजेंद्र शर्मा : वक्त के आईने में

नई दिल्ली के राजेन्द्र प्रसाद भवन सभागार में आयोजित कार्यक्रम में हरि भटनागर द्वारा सम्पादित पुस्तक 'तेजेन्द्र शर्मा : वक्त के आईने में' का लोकार्पण डॉ० नामवर सिंह तथा कृष्णा सोबती द्वारा किया गया। राजेन्द्र यादव और अजय नावरिया ने प्रवासी भारतीय कहानीकार तेजेंद्र शर्मा की कहानियों पर प्रकाश डाला।

बिना कल के आज की कल्पना बेमानी है!

प्रो० नित्यानंद तिवारी

पुराने का अध्ययन और विश्लेषण मुझे आज को समझने की अन्तर्दृष्टि देता है। जो लोग पुराने को काबू में करे केवल आज ही पर जोर दे रहे हैं वे नहीं जानते कि बिना कल के आज की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

उक्त विचार सुप्रसिद्ध आलोचक प्रो० नित्यानन्द तिवारी ने गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान में आयोजित विचार-गोष्ठी और वरिष्ठ कवि उद्‌भ्रांत की पुस्तकों के विमोचन के मौके पर व्यक्त किए।

इस अवसर पर उद्‌भ्रांत की पुस्तकों—'सदी का महाराग' का लोकार्पण प्रो० तिवारी ने किया। यह रेवती रमण द्वारा सम्पादित उद्‌भ्रांत की बीसवीं सदी की कविताओं का संचयन है। उद्‌भ्रांत के नए कविता संग्रह 'हँसो बतर्ज रघुवीर सहाय' का विमोचन प्रो० नामवर सिंह द्वारा, उद्‌भ्रान्त द्वारा सम्पादित लघु पत्रिका 'आन्दोलन' और युवा की भूमिका का विमोचन राजेन्द्र यादव द्वारा तथा शीतल शेटे द्वारा लिखित 'राम की शक्तिपूजा एवं रुद्रावतार' का विमोचन पंकज बिष्ट द्वारा किया गया। इस मौके पर रामप्रसाद शर्मा 'महर्षि' द्वारा लिखित पुस्तक 'गज़ल और गज़ल की तकनीक' का भी विमोचन संयुक्त रूप से किया गया।

हिन्दी के वरिष्ठ कथाकार एवं 'हंस' के सम्पादक राजेन्द्र यादव ने कहा कि ''आज लघु पत्रिका को सीधे-सीधे चिह्नित करना बेहद कठिन है क्योंकि अब सारी पत्रिकाएँ ढाई-तीन सौ से पाँच सौ पृष्ठों की निकल रही हैं।''

'समयांतर' के सम्पादक और वरिष्ठ कथाकार पंकज बिष्ट ने कहा कि ''लघु पत्रिका हमेशा सत्ता के खिलाफ आवाज उठाती है। जिस पत्रिका में यह शक्ति नहीं होती वह लघु पत्रिका की श्रेणी में नहीं आ सकती।''

कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो० नामवर सिंह ने उद्‌भ्रांत की कविताओं के बहाने कवि की चर्चा में कहा कि ''वे अपनी बेबाकी में रिश्ता निभाने की औपचारिकता का हमेशा अतिक्रमण करते रहे हैं। उन्होंने आज के दौर की महत्त्वपूर्ण पत्रिकाओं में 'समयांतर' की भूमिका को महत्त्वपूर्ण मानते हुए उसे साहित्य समाज के पहरेदार की संज्ञा दी।''

समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्य सम्मेलन सम्पन्न

विगत दिनों लन्दन स्थित नेहरू केन्द्र के मुख्य सभागार में समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्य सम्मेलन सम्पन्न हुआ। केन्द्र की निदेशक श्रीमती मोनिका कपिल मोहता ने सबका स्वागत किया। भारतीय दूतावास में हिन्दी एवं संस्कृति अधिकारी श्री आनन्द कुमार ने संचालन किया। सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो० श्याम मनोहर पाण्डेय ने की एवं बीज वक्तव्य डॉ० कृष्णकुमार ने दिया। सम्मेलन का विषय था 'समकालीन प्रवासी हिन्दी साहित्य'। इसमें यू०के० के अनेक विचारशील लेखकों, पत्रकारों तथा हिन्दी-प्रेमियों ने हिस्सा लिया। वक्ताओं में शामिल थे भारत के अप्रवासी कार्य मन्त्रालय के अवर सचिव डॉ० मृणाल कान्त पाण्डेय तथा यू०के० के सर्वश्री अचला शर्मा, उषाराजे सक्सेना, जकिया जुबैरी, तेजेन्द्र शर्मा।

बाल साहित्य समारोह आयोजित

साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश तथा संस्कृति परिषद्, भोपाल द्वारा एस०ओ०एस० बाल ग्राम एवं बाल साहित्य-शोध संस्थान केन्द्र, भोपाल के सहयोग से तीन दिवसीय बाल साहित्य समारोह का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें बाल ग्राम के बाल रचनाकारों की कार्यशाला का उद्‌घाटन हुआ, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० प्रेम भारती ने की। इसमें विभिन्न बाल रचनाकारों ने अपनी रचनाओं का सृजन किया। श्री कृष्णकुमार अस्थाना की अध्यक्षता में कार्यशाला में लिखी गयी रचनाओं का पाठ किया गया तथा बाल कवियों द्वारा श्री हुकुमपाल सिंह 'विकल' की अध्यक्षता में बाल कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों व बाल कवियों को पुरस्कृत भी किया गया।

'भोजपुरी की पंक्तिपावन कलाएँ' का लोकार्पण

विगत दिनों इंडियन काउंसिल ऑफ सोशल साइंस रिसर्च, अरुणा आसफ अली मार्ग, नई दिल्ली में डॉ० प्रेम प्रकाश पाण्डेय एवं श्रीमती हेमलता पाण्डेय की सद्य: प्रकाशित कृति 'भोजपुरी पंक्तिपावन कलाएँ' का लोकार्पण पूर्व राज्यपाल श्री त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत में मॉरीशस के उच्चायुक्त श्री मुकेश्वर चुन्नी तथा विशिष्ट अतिथि श्रीमती देविका चुन्नी थीं। मुख्य वक्ता के रूप में प्रो० जावेद आलम उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन प्रो० सुषमा यादव तथा धन्यवाद ज्ञापन श्री अमित गर्ग ने किया।

हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य पर विचार-गोष्ठी

नई दिल्ली की साहित्य अकादेमी में 'अक्षरम्' तथा 'साहित्य अमृत' के तत्त्वावधान में 'हिन्दी के वैश्विक परिदृश्य पर एक विहंगम दृष्टि : एक संवाद' विषय पर एक विचार-गोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें विश्व हिन्दी सचिवालय, मॉरीशस की महासचिव डॉ० विनोद बाला अरुण मुख्य रूप से उपस्थित थीं।

31वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन अहमदाबाद (गुजरात) में सम्पन्न

नागरी लिपि परिषद् नई दिल्ली का 31वाँ अखिल भारतीय सम्मेलन विगत दिनों राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के सहयोग से गुजरात विद्यापीठ के परिसर में सम्पन्न हुआ। देश के प्रमुख विद्वानों, भाषाविदों तथा नागरी लिपि प्रेमियों ने इसमें बड़े उत्साह से भाग लिया और अपनी सहभागिता दर्शाई।

गुजरात विद्यापीठ के कुल नायक डॉ० सुदर्शन आयंगार ने सम्मेलन का उद्‌घाटन किया तथा नागरी लिपि परिषद् नई दिल्ली के अध्यक्ष सी०वी० चारी ने अध्यक्षता की। नागरी लिपि परिषद नई दिल्ली के महामन्त्री डॉ० परमानंद पांचाल ने अपने भाषण में नागरी लिपि परिषद् के उद्देश्यों एवं कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नागरी लिपि से किसी भी भाषा को खतरा नहीं है। नागरी लिपि राष्ट्रीय एकता और भाषा सौहार्द बढ़ाने में सहायक है। जिन बोलियों और भाषाओं की कोई लिपि नहीं है उन्हें नागरी लिपि से ही बचाया जा सकता है।

भारतीय भाषा संस्कृति संस्थान, गुजरात विद्यापीठ के निदेशक डॉ० अंबाशंकर नागर ने अपने मंतव्य में कहा कि विश्व में भाषाओं का निधन हो रहा है, भाषा कालकलवित हो रही हैं। पिछले पाँच वर्षों में हजारों भाषाएँ समाप्त हो

चुकी हैं। 2008 ई० में 6000 भाषाएँ बची थीं। अब 2010 में केवल 600 भाषाएँ बचने को हैं। सारे विश्व में मातृभाषा बचाओ आन्दोलन चल रहा है। गुजरात विद्यापीठ के कुलनायक डॉ० सुदर्शन आयंगर ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि समस्त भारतीय लिपियों का आधार ब्राह्मी लिपि है। आज अंग्रेजी भाषा उतनी खतरनाक नहीं है, जितना उसका माध्यम होना खतरनाक है। वस्तुत: अंग्रेजी भाषा की शिक्षा भी नागरी लिपि में होनी चाहिए। भारतीय संस्कृति व भारतीय भाषाओं की सुरक्षा के लिए सर्वश्रेष्ठ लिपि नागरी का प्रयोग व्यापक स्तर पर होना आवश्यक है।

इस अवसर पर वर्ष 2008-09 के विनोबा नागरी पुरस्कार (नकद रुपए 7000, शॉल तथा प्रतीक चिह्न) डॉ० बालशौरी रेड्डी एवं प्रो० डॉ० सी०ई० जीनी, (मिजोरम) को स्वतन्त्र रूप से तथा आन्ध्रप्रदेश नागरी लिपि परिषद् हैदराबाद को संस्थागत पुरस्कार (नकद रुपए 10,000, शॉल व प्रतीक चिह्न) प्रदान किए गए। तत्पश्चात 'नागरी संगम स्मारिका' का लोकार्पण हुआ। इस सम्मेलन में देश भर से पधारे विद्वान साहित्यकारों ने सहभागिता की।

रेडियो धारावाहिक 'विरासत' का लोकार्पण

रेडियो धारावाहिक में ध्वनि-बिम्ब कथा के सरोकार के साथ विचार के सरोकार को भी नाटकीयता के साथ जनमानस तक पहुँचाते हैं। रेडियो पर प्रचलित रूपक, डाक्यू ड्रामा, नाटक, धारावाहिक आदि वास्तव में अलग विधाएँ नहीं हैं, अपितु एक ही विधा की विविध छवियाँ हैं। ये शब्द वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० नरेन्द्र मोहन ने डॉ० रवि शर्मा द्वारा लिखित 'विरासत' के लोकार्पण के अवसर पर अपने अध्यक्षीय भाषण में कहे। कार्यक्रम का आयोजन अणुव्रत भवन, नई दिल्ली में शब्द हेतु एवं अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया था।

तेलुगु उपन्यास 'मरीचिका' लोकार्पित

18 मई को बहुचर्चित तेलुगु उपन्यास 'मरीचिका' का हिन्दी अनुवाद आन्ध्र प्रदेश के राजभवन में महामहिम राज्यपाल श्री नारायणदत्त तिवारी ने लोकार्पित किया। डॉ० वासि रेड्डी सीतादेवी कृत इस उपन्यास के अनुवाद के साथ आन्ध्र प्रदेश हिन्दी अकादमी द्वारा अनुदान प्राप्त कुछ और हिन्दी पुस्तकों का लोकार्पण भी सम्पन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी अकादमी के अध्यक्ष आचार्य यार्लगड्ड लक्ष्मीप्रसाद ने कहा कि हर वर्ष अकादमी उत्तम हिन्दी ग्रन्थों के प्रकाशन के लिए अनुदान प्रदान करती रहेगी।

हिन्दी में पहला समाज वैज्ञानिक विश्वकोष

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल साइंसेस की तर्ज पर हिन्दी में पहला समाज वैज्ञानिक विश्वकोष तैयार किया गया है। इसमें विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े शब्दों को शामिल करते हुए उनके अर्थ बताये गये हैं। इन विषयों में समाज विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, भूविज्ञान, सामाजिक इतिहास, पुरातत्त्व शास्त्र, भारत विद्या, मनोविज्ञान और पत्रकारिता आदि शामिल हैं। यह कोष पाँच खण्डों में पूरा किया गया है। यह कोष मीडिया शोध केन्द्र ने तैयार किया है।

देशी भाषाओं में अभी तक सिर्फ मराठी में ही ऐसा कोष प्रकाशित हो पाया था। मीडिया रिसर्च सेंटर की बैठक को सम्बोधित करते हुए कोष के प्रधान सम्पादक वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री डॉ० श्याम सिंह शशि ने कहा लगभग डेढ़ हजार पृष्ठों में फैले इस विश्वकोष को अगले चरण के लिए रोल माडल के तौर पर इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भूविज्ञान विभागाध्यक्ष प्रोफेसर आई० पी० सिंह, वरिष्ठ पत्रकार अक्षय कुमार जैन, त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी आदि ने योगदान दिया है। इसके पहले खण्ड का लोकार्पण वर्ष 1993 में पूर्व राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा ने किया था।

इलाहाबाद में शिक्षा और संस्कृति का नया केन्द्र

वर्धा स्थित महात्मा गाँधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय ने पिछले दिनों इलाहाबाद में अपने क्षेत्रीय विस्तार केन्द्र की स्थापना की। इसके उद्घाटन अवसर पर बहुत दिनों बाद साहित्यकारों, भाषाविदों व शिक्षाविदों का अच्छा-खासा जमावड़ा हुआ। इस अवसर पर हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति विभूतिनारायण राय ने कहा कि इलाहाबाद स्थित यह केन्द्र शहर की संस्कृति का नया केन्द्र बनेगा। इस केन्द्र से दूरशिक्षा के पाठ्यक्रम संचालित किए जायेंगे जिसमें मुख्यतया हिन्दी माध्यम से, बी०बी०ए०, एम०बी०ए० भी होगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय भारतेन्दु युग से लेकर अब तक की रचनाएँ नेट पर उपलब्ध कराने के लिए सतत् कार्यरत है। हिन्दी के बड़े लेखकों की पाण्डुलिपियों का भी एक वृहद संग्रहालय बनाया जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि इलाहाबाद की साहित्यिक सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए यह केन्द्र प्रतीकात्मक शुल्क पर जगह भी उपलब्ध कराएगा।

साहित्यकार, सत्ता और राजनीति को सदैव अनुप्राणित करता रहा है प्रो० शत्रुघ्न प्रसाद

काशी में अखिल भारतीय नवोदित साहित्यकार परिषद (सम्बद्ध अखिल भारतीय साहित्य परिषद्, नई दिल्ली) के तत्त्वावधान में 'साहित्य और सत्ता की राजनीति' विषयक संगोष्ठी विगत दिनों प्रसिद्ध समालोचक, उपन्यासकार व राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त के पुरस्कार से सम्मानित प्रो० शत्रुघ्न प्रसाद (पटना-बिहार) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। डॉ० दीनानाथ सिंह ने 'साहित्य और सत्ता की राजनीति' विषय की स्थापना की।

साहित्यकार का मरना राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता का मरना है। इसलिए साहित्य और सत्ता का संघर्ष अन्तिम वक्त तक होना चाहिए। मुख्य अतिथि डॉ० प्रवीण आर्य एवं राष्ट्रीय सह-संयोजक डॉ० राजकुमार उपाध्याय 'मणि' के उपरान्त कार्यक्रम के अध्यक्ष, प्रख्यात आलोचक व उपन्यासकार प्रो० शत्रुघ्न प्रसाद ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि साहित्यकार सत्ता और राजनीति को सदैव प्रभावित एवं अनुप्राणित करता रहा है इसलिए यदि चौथा स्तम्भ पत्रकारिता है तो पाँचवाँ स्तम्भ साहित्य होना चाहिए।

लोकार्पण

'हिन्दी के सार्वजनिक क्षेत्र के निर्माता : आचार्य केशवप्रसाद मिश्र' लेखक-सम्पादक प्रोफेसर महेन्द्रनाथ, हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का लोकार्पण 25 जून 2009 को नागरी प्रचारिणी सभा के प्रांगण में आचार्य केशवप्रसाद मिश्र के वयोवृद्ध शिष्य एवं डी०ए०वी० डिग्री कॉलेज वाराणसी के पूर्व प्राचार्य एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ० शितिकंठ मिश्र के हाथों हुआ। इस ग्रन्थ में पहली बार हिन्दी विभाग, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के बाबू श्यामसुन्दर दास एवं आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के क्रम में तीसरे यशस्वी आचार्य एवं अध्यक्ष बने आचार्य केशवप्रसाद मिश्र की 10 हिन्दी कविता, 5 संस्मरण, 14 निबन्ध और समीक्षाएँ, 3 संकलनों की भूमिकाएँ, दूसरे की कृतियों पर लिखी उनकी 7 भूमिकाएँ, अनेक शुभाशंसाएँ, अनुशंसाएँ, उनसे सम्बन्धित 17 पत्र, 25 संस्मरण, 3 अभिभाषण, प्रतिक्रिया-प्रतिवेदन और उनकी स्वयं की हस्तलिपि में बनाये गए कुछ प्रश्न पत्र और अध्यापनार्थ उनके द्वारा लिये गये नोट्स इस ग्रन्थ में समाहित हैं।

काशी के साहित्यकारों, प्रतिष्ठित नागरिकों एवं प्रशासनिक अधिकारियों की उपस्थिति में इस लोकार्पण समारोह में प्रो० अवधेश प्रधान, प्रो० बलिराज पाण्डेय, डॉ० राजेन्द्रप्रसाद पाण्डेय, पं० धर्मशील चतुर्वेदी, पं० श्रीकृष्ण तिवारी, प्रो० रामजी मालवीय, डॉ० जीतेन्द्रनाथ मिश्र डॉ० सुमन जैन आदि ने वर्षों से प्रतीक्षित इस ग्रन्थ के प्रकाशन पर सुखद आश्चर्य व्यक्त करते हुए एक ओर प्रोफेसर महेन्द्रनाथ राय के इस भगीरथ प्रयत्न की जहाँ भूरि-भूरि प्रशंसा की, वहीं हिन्दी के अध्येताओं और शोधछात्रों के लिए इसे नई विषय-वस्तु भी स्वीकार किया।

सामान्य पाठकों, छात्रों, अध्येताओं, शोधार्थियों, पुस्तकालयों, शिक्षा संस्थाओं, स्कूल-कॉलेज, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं सरकारी/ गैर सरकारी संस्थाओं आदि के सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान हेतु

तीन हजार वर्ग फुट में स्थापित पुस्तकों का विशाल शोरूम तथा इंटरनेट की वैश्विक दुनिया में स्थापित विशाल वर्चुअल शोरूम

http://www. vvpbooks.com *(With Online Shopping facility by Credit Card also)*

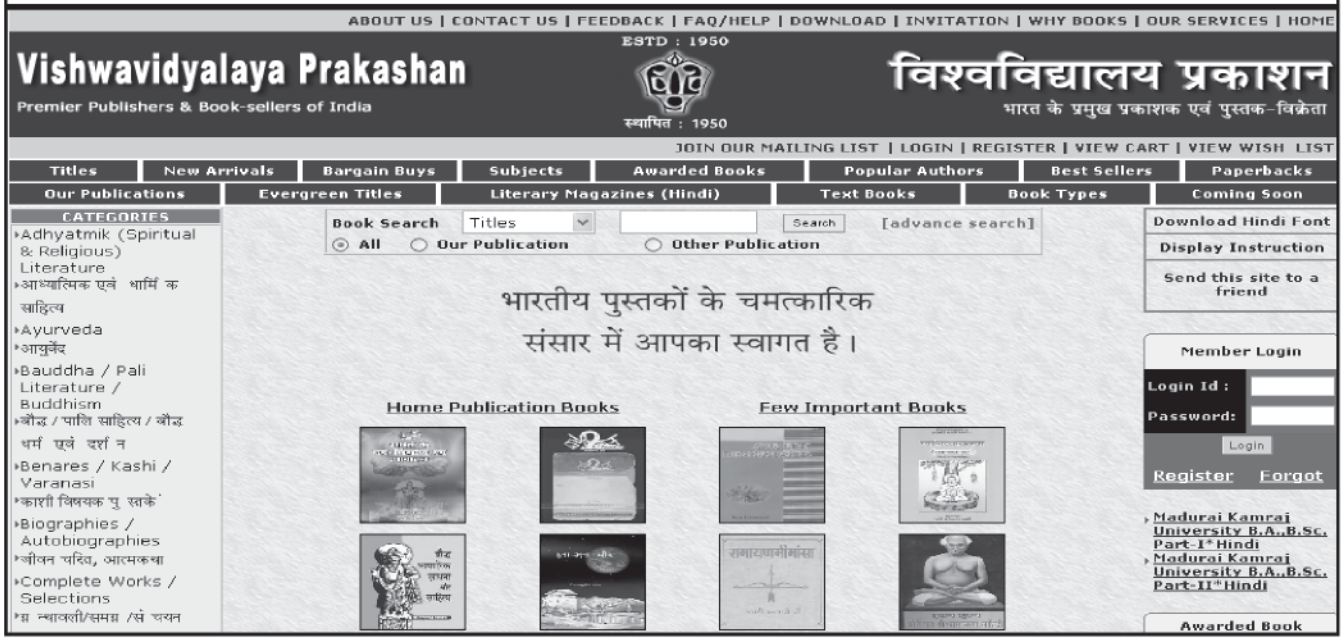

(Website is being updated regularly)

साहित्यिक तथा विभिन्न विषयों की हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत पुस्तकों का विशाल संग्रह

अनेकानेक विषयों के साथ आपकी सेवा में सदैव तत्पर

साहित्य, भाषा-विज्ञान, उपन्यास, कथा-कहानी, कविता, नाटक, आलोचना, समीक्षा, संस्मरण, जीवनी, आत्मकथा, यात्रा वृत्तांत आदि। अध्यात्म, योग, तंत्र-मंत्र, ज्योतिष, मनीषी-संत-महात्मा जीवनचरित, धर्म एवं दर्शन, भारत विद्या, इतिहास, कला एवं संस्कृति, पुरातत्त्व, अभिलेख, मुद्राएँ, संग्रहालय विज्ञान, वास्तु कला, जनसंचार, पत्रकारिता, संगीत, अर्थशास्त्र, वाणिज्य, प्रबन्धशास्त्र, राजनीति, शिक्षाशास्त्र, समाज विज्ञान, स्त्री-विमर्श, मनोविज्ञान, भूगोल, भू-विज्ञान, विशुद्ध विज्ञान जैसे—फिजिक्स, केमिस्ट्री, जूलॉजी, बॉटनी, बायोलॉजी और कम्प्यूटर साइंस आदि। मानविकी, समाज विज्ञान और कुछ विशेष विषयों के अन्तर्गत लगभग सभी विषयों की महत्त्वपूर्ण पुस्तकों की उपलब्धता सुनिश्चित कर सम्पूर्ण पुस्तकीय समाधान की ओर सतत प्रयासरत।

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

विशालाक्षी भवन, चौक (चौक पुलिस स्टेशन परिसर के पार्श्व में)

वाराणसी-221001 (उ०प्र०)

Phone & Fax : (0542) 2413741, 2413082 ● E-mail : vvp@vsnl.com & sales@vvpbooks.com ● Website : www.vvpbooks.com

Variety of Books by Variety of renowned Authors Published by Variety of renowned Publishers under one roof

पुस्तकें प्राप्त करने हेतु सुविधानुसार पधारें, लिखें, फोन/फैक्स करें, ई-मेल करें अथवा वेबसाइट का अवलोकन कर ऑनलाइन पुस्तकों का आदेश करें।

प्राप्त पुस्तकें और पत्रिकाएँ

कलंक : लेखक : चरित्र पाल सिंह, प्रकाशक : लिपि मानसी प्रकाशन, बी-49, सेक्टर 15, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर-201301, मूल्य : 300/-रु० मात्र।

वर्तमान भारतीय समाज में व्याप्त सवर्ण मानसिकता के जातीय-भेदभाव से जुड़ी 12 कहानियों का संग्रह है 'कलंक'। विद्वान लेखक ने सैन्धव-सभ्यता और वैदिक-पौराणिक दार्शनिक मानव-मूल्यों की तह में जाते हुए वर्तमान की विसंगतियों को रेखांकित करने का प्रयास किया है। इस रचना में वर्ग-विशेष की सामाजिक-मानसिकता पर आक्रामक-प्रहार न करके दलितों के प्रति रचनात्मक-परिवर्तन का अंकन किया गया है जो एक सार्थक पहल है। साहित्य में प्रचलित कहानी के शिल्प की दृष्टि से भले ही कुछ कमज़ोरियाँ लक्ष्य की जा सकती हैं किन्तु कथ्य की प्रामाणिकता और रचना की संवेदनशीलता ने अपना शिल्प स्वयं निर्मित कर लिया है। मानवीय-संवेदन के धरातल पर व्यवस्था में परिवर्तन का संकेत देती ये कहानियाँ प्रेरणा देती हैं, जाग्रत करती हैं।

अंगिका भाषा का ध्वनि वैज्ञानिक अध्ययन : लेखक : डॉ० रमेश मोहन शर्मा 'आत्मविश्वास', प्रकाशक : उषा आत्मविश्वास, अ०भा० अंगिका साहित्य विकास परिषद्, जयमंगल टोला परबन्ता, भागलपुर-853204, बिहार, मूल्य : 255/-रु० मात्र।

प्राचीन भारतीय आर्यभाषाओं के विकास-क्रम में 'मागधी-प्राकृत' क्षेत्र की विभिन्न बोलियों में 'अंगिका' का स्थान है। अनुसंधानकर्ता विद्वान ने 'अंगिका' भाषा के ध्वनिवैज्ञानिक स्वरूप का विवेचन 'अनुस्वर' की स्थापना से आरम्भ किया है। शोधक्रम में लेखक ने अनुमान-प्रमाण के आधार पर सिद्ध करने की कोशिश की है कि श्रुति-परम्परा में वैदिक-ध्वनियों के उच्चरित-स्वरूपों के अन्तर ने तत्कालीन आचार्यों को पाठ-संस्कार के लिये प्रेरित किया होगा जिससे वेदों की विभिन्न शाखाएँ अस्तित्व में आयीं और पाठ-उच्चारण स्थिर किया जा सका। यहीं लेखक का मंतव्य है कि कतिपय ध्वनियों का मूलरूप आचार्यों की दृष्टि से ओझल हो गया परिणामत: स्वरों का एक महत्त्वपूर्ण रूप 'अनुस्वर' गौण हो गया किन्तु यह 'अनुस्वार' के रूप में प्रयुक्त होता रहा। अंगिका-भाषा के 'अनुस्वरों' के साथ भाषा में प्रयुक्त होने वाले सभी स्वरों-व्यंजनों के ध्वनि-वैज्ञानिक विवेचन द्वारा शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध को परिपूर्ण बनाने का प्रयास किया है।

सच्ची वीरता, लेखक : अध्यापक पूर्णसिंह, सम्पादक : सत्यनारायण मिश्र, प्रकाशक : जीवन प्रभात प्रकाशन, ए 4/1 कृपानगर, मुंबई-400056, मूल्य : 15/-रु० मात्र

पूर्णसिंह का निबन्ध 'सच्ची वीरता', स्वयं एक सम्पूर्ण रचना है। ललित-निबन्ध शैली की इस रचना में लेखक ने आत्मिक-सत्व सम्पन्न आध्यात्मिक-वीरता को परिभाषित किया है। दैहिक-शक्ति और अस्त्र-शस्त्रों की होड़ के बीच हमेशा ही आत्म-वीर विजय प्राप्त करते हैं। सरल, सुबोध शब्दावली में वैश्वक-सन्दर्भों से भरपूर यह निबन्ध सुपाठ्य होने के साथ प्रेरणाप्रद भी है। 'पुराने चावल' शृंखला के अन्तर्गत प्रकाशित इन पुस्तकों से सामान्य हिन्दी पाठक निश्चित ही लाभान्वित होगा।

काई के फूल (कविता संग्रह), कवि : सुशील दाहिमा 'अभय', प्रकाशक : क्षणिका प्रकाशन, जी एम-10, बासंती नगर, राउरकेला-769012 (ओड़िशा), मूल्य : 100/-रु० मात्र

अध्यापक-पत्रकार-लेखक सुशील दाहिमा 'अभय' द्वारा सन् 1963 से 2008 के बीच लिखी गयी कविताओं का संग्रह है 'काई के फूल'। लगभग पाँच दशकों के बीच लिखी गयी ये कविताएँ जीवन और प्रकृति के अलग-अलग रंग-सन्दर्भों, संघर्षों की सामाजिक परिवृत्ति में व्यक्त होती हैं। उन्मुक्त-मन के इस कवि की संवेगात्मक अनुभूति का दस्तावेज़ हैं ये कविताएँ, जिन्हें साहित्य में प्रचलित वादों, मुहावरों के किसी भी मानक की ज़रूरत नहीं। कवि के शब्दों में "उलझ रहे विवाद/शब्द-शब्द जुड़ने में/बिखरते रहे अर्थ/प्रश्नों से गहराता अँधेरा/शक्ल बदल गयी प्रतिमानों की/मेरी टूटी चप्पल तले।"

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 10 **जून-जुलाई 2009** **अंक : 6-7**

संस्थापक एवं पूर्व प्रधान संपादक

स्व० पुरुषोत्तमदास मोदी

संपादक : **परागकुमार मोदी**

वार्षिक शुल्क : रु० 50.00

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

के लिए प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी *द्वारा मुद्रित*

डाक रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2003 RNI No. UPHIN/2000/10104

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

Licenced to post without prepayment at

G.P.O. Varanasi

Licence No. LWP-VSI-01/2001

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बॉक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIANS)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

☎ : Offi. : (0542) 2413741, 2413082, 2421472, (Resi.) 2436349, 2436498, 2311423 ● Fax : (0542) 2413082

E-mail : sales@vvpbooks.com ● Website : **www.vvpbooks.com**